नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व - पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढ़मं हवइ मंगलं।



" गीत आत्मा का आनंद है
गीत का जादू रागी को वैरागी बनाता है
तो भक्त को भगवान से मिलाता है "

– आशा सेठिया

नमन

जिनशासन प्रद्योतक, नानेश पट्टधर
आचार्य श्री 1008 श्री रामलालजी म.सा.

प्रस्तुति

कृति पुण्यांजली
सस्करण : मई 2010
प्रतियॉ 1000

अर्थ सहयोगी

श्री. लक्ष्मीलालजी सेठिया
(श्रीमती आशा जी सेठिया के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य मे)

प्रकाशक

श्री साधुमार्गी जैन सघ - मुम्बई
समता महिला मण्डल - मुम्बई

साभार

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर

प्राप्ति स्थल

श्री. लक्ष्मीलाल सेठिया
203-ए, राज केसल, आइ सी कॉलनी,
बोरीवली (वेस्ट), मुम्बई 400 103
फोन 28944451, 9869285628



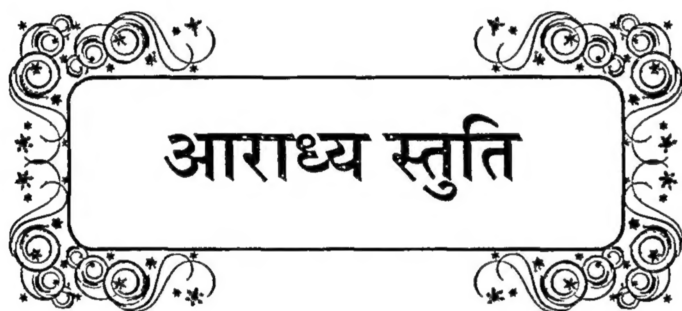
समर्पण

प्रार्थना के स्वरो मे भक्ति के भाव के साथ शिक्षा का पुट हो। चेतना को जागृत करने वाली पक्तियाँ हो तो प्रार्थना, **प्रवचन** बन जाती है तथा इन भक्ति के स्वरो के साथ आत्म जागरण का अपूर्व सदेश दे जाती है। प्रार्थना, परमात्मा से सीधे तार जोडने की कडी है। प्रार्थना, परमात्मा के स्वरूप को जानने का माध्यम है। अत परमात्मा पद को पाने के लिये जिन गहराईयो, समर्पण व अध्यात्म मार्ग मे चलने का पराक्रम किया जाना चाहिये उन शब्दावलियो को पिरोकर प्रार्थना का सृजन किया जाना श्रेष्ठ होगा। प्रार्थना प्रात कालीन समय मे की जाती है। मस्तिष्क अन्य समय की अपेक्षा इस समय शात - प्रशात होता है। अत प्रार्थना भक्ति के स्वरो के साथ जीवन रूपान्तर का क्रम बन सकती है। "मननात मनुष्य " यह सस्कृत सूत्र दिखने मे बहुत छोटा है, किन्तु इसके भाव बहुत गभीर है। इस ससार मे गहराई से चितन - मनन मनुष्य करता है न कि पशु, क्योकि मानव का मन मस्तिष्क ही मनन करने की उर्वरा भूमि है। चितन - मनन का सागर है मनुष्य का मानस। किन्तु हर मानव अपने मानस से उभरने वाले विचारो को सकलित नही कर पाता है, कुछ विरले ही ऐसे महामानव होते है, जो अपने मानस का सही उपयोग करते है। आज ऐसे महामानव है हमारे हुक्मगच्छ के नवम् नक्षत्र, युगनिर्माता, जिनशासन प्रद्योतक, अविचल आस्था के केन्द्र मेरे परम आराध्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म सा जो अपनी अद्‌भुत प्रतिभा और प्रखर मेघा के साथ सघ का कुशल नेतृत्व कर रहे है जिनकी पावन नेश्राय मे अनेक भव्य आत्माएँ अपनी स्वय की आत्मा का उद्धार करते हुए जनमानस पर अपने सद्‌गुणीजीवन की महक बॉट रहे है। उन्ही का आशीर्वाद पाते हुये सघ समर्पित, शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री ताराकवर जी म सा के सानिध्य मे जीवन जीने की सही कला सीखते हुये **परम विदुषी महासती श्री प्रमिला जीश्री म. सा.** अपने सयम जीवन को निखार रहे है। "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" के अतर्भावो से उद्‌भुत सुविचारो को शब्द रूपी मोतियो से सजाते हुये सगीत रूपी माला मे पिरोते जा रहे है व अपनी प्रतिभा को विकसित कर रहे है। जीवन मे आचारित सद्‌ गुणो को वे अपने आराध्य को समर्पित करते है और उनका तरीका है - कविता मुक्तक गीत आदि। मैने उन्ही गीतो को सकलित किया है - जिनको आराध्य स्तुति, स्वागतगीत, जन्मदिन, सयम, तप, विदाई एव पुण्य स्मृति दिवस आदि विभागो मे विभाजित किया गया है। **"पुण्यांजली"** के गीत आत्मा को भाव विभोर कर देते है इन गीतो को सिर्फ लय ही नही, भावो से भी आत्मा मे अपूर्व आनद की अनुभूति होती है।

प्रस्तुत कृति के प्रकाशन हेतु श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन सघ, बीकानेर ने हमे जो अवसर प्रदान किया उसके लिये हम उनके भी हृदय से आभारी हैं। इस कृति को प्रकाशित करने मे पूर्ण सावधानी रखी गयी है, फिर भी कोई त्रुटि हो गयी हो तो हम क्षमाप्रार्थी है ।

- आशा सेठिया

अनुक्रमणिका


आराध्य स्तुति

तर्ज - मां शारदे कहां तू ...

ओ वीतराग भगवन, स्वीकारो मेरा वदन।
मंगल करो हमारा, मगल है धर्म प्यारा ।।टेर।।

अरिहंत सिद्ध गणीवर, उपाध्याय सर्व सतन।
श्रुतज्ञान के प्रदाता ज्योति स्वरुप निरजन।।1।।

हर प्राणी का हो मंगल, हर जन सुखी हो भू पर।
नही वैर भाव मन मे, सब शातिमय हो सुखकर ।।2।।

अरिहत की शरण हो, श्री सिद्ध की शरण हो।
सर्व साधु की शरण हो, "पुण्य" मय धर्म शरण हो।।3।।

तर्ज - आये हो ...

नवकार मत्र जपते जो भाव शुद्ध करके।
शाश्वत सुख को पाये वो वीतरागी बन के ।।टेर।।

मेरे देव है ये अरिहन्त, महाकर्म को मिटाया।
सिद्धो ने मुक्त होकर परमात्म पद को पाया।।
हम पाये आत्म शाति इनका ही ध्यान धर के ।।1।।

आचार्य गण के पालक जो दीप से दीप जलाये।
सद्ज्ञान गुण के सागर उपाध्याय को है पाये।।
सयम को ले के साधु जीवन मे चमके-दमके ।।2।।

महामत्र को जो सुमिरे, वह "पुण्य" फल को पाते।
पापो की ज्वाला मिटती, जो ध्यान मन मे लाते।।
मगल सदा मनाये, इनकी शरण मे रह के ।।3।।

तर्ज - आये हो मेरी जिन्दगी में तुम

मेरी आत्मा को भगवन परमात्मा बना दो
जन्मो जन्म से भटकी होऽऽऽ भव सिन्धु से तिरा दो

नरभव का मौका आया, जिन धर्म मैने पाया।
फिर भी मै खुद को भुला, पुद्‌गल का मोह छाया।
समकित की लौ जला के होऽऽऽ शिव लक्ष्मी से मिला दोऽ।।1

पापो की बदली छाई, दुर्वासना ने घेरा।
विषयों की आंधियो ने चहुँ ओर डाला डेरा।
अन्तर को शुद्ध बना के होऽऽऽ सिद्धि का स्वर मिला दो।।2।।

गुरु राम की कृपा से, वो रास्ता मिला है।
मुझे सिद्ध बुद्ध बनना, जीवन चमन खिला है।
"पुण्य" की ज्योत जला कर होऽऽऽ मेरे मन को जगमगा दो।

तर्ज - जहां डाल - डाल पर सोने की

जिनके कण-कण मे त्याग और सेवा की बहती धारा ।-1
समतामय सघ हमारा ।-2
सब एक सुत्र मे बधे है हम सब, एक हो सबका नारा ।।टेर।।

सघ हमारा गौरव शाली, इसकी महिमा गाये।
अर्पण कर तन -मन-धन सारे इसकी शान बढाए।।
जहा श्रद्धा और समर्पण का अनुपम चमके ध्रुव तारा ।।1।।

श्री हुक्म गणि और शिवलालजी, उदय हुए उपकारी।
श्री चौथमल, श्री लाल जवाहर, गणेश की महिमा भारी।।
गुरु नाना और राम ने मिलकर शासन को उजियारा।।2।।

यह समतामय श्री सघ हमारा अपना ही परिजन है।
इसकी रक्षा का हमको अब करना नव चितन है।।
"पुण्य" खिले नित-नूतन इसके, मिटे सकल अंधियारा।।3।।

तर्ज - उड़ते पंछी नील गगन में ....

साधु-मार्गी संघ है प्यारा, गौरव गरिमा गाये।
हम संघ की शान बढाये।।
समता सेवा और समर्पण, श्रद्धा से विकसाये।।टेर।।

सघ हमारा मंगलकारी तीर्थ न कोई दूजा।
यही देव और गुरु हमारे, करते इनकी पूजा।।
एक-एक से गणिवर इसकी सौरभ को महकाये ।।1।।

हुक्म गणी और शिवलाल जी उदय हुए अवतारी।
चौथमल श्री लाल जवाहर जग मे चमके भारी।।
गणेश गुरु का त्याग निराला, नही पद में ललचाये ।।2।।

शासन के सिरमोर सुहाने नानाचार्य हमारे।
राम गुरु ने तप सयम से इसको खूब सवारे।।
जन-जन के आधार बने है, श्रद्धा सुमन चढाए ।।3।।

इन बलिदानी वीरो का है जोश भरा-रग-रग मे।
नयी स्फुरणा और ताजगी भरी हुई अग-अग मे।।
"पुण्य" चेतना जागृत करके, जीवन अपना सजाये ।।4।।

तर्ज - जैन धर्म के लिए ...

साधुमार्गी सघ के लिए न्योछावर हो प्राण।
अर्पित कर दे तन-मन अपना ऐसा दो वरदान
हमको ऐसा दो वरदान ।।टेर।।

आयेगे अवरोध हजारो पथ मे नही रुकेगे।
महाभयकर तूफानो से नही कभी भी झुकेगे।।
बढते जाये कदम निरन्तर, दो सुपथ पहचान ।।1।।

साथ न देगे कोई अगर तो खेद नही है करना।
साहस के बल से ही हमको भवसागर है तरना।।
दृढविश्वास हमारा है तो सफल बने अरमान ।।2।।

कल-कल करता बहता झरना हमको यही सिखाये।
आतप हरकर शीतलता दे सबको सुखी बनाये
गुरुदेव की "पुण्य" शरण ले हो जाये कुर्बान ।।3।।

तर्ज - घर आजा परदेशी तेरा देश बुलाए रे ...

आई संघ मे नयी बहार, नदन वन सा है गुलजार
आओ हम सब मिलकर इसकी शान बढ़ाए रे
गण अपना परिवार यहा पर स्वर्ग मनाए रे ।।टेर।।

मालिक राम गुरु है अपने, जीवन सौंप दिया है हमने।
इनकी सीख सदा अपनाए आनंद पाए रे ।।1।।

जो भी माने इनकी आण, उसका है ऊँचा स्थान।
पाएगा सम्मान वही पंडित कहलाए रे।।2।।

जो आए करने तकरार, उसकी टूटेगी दीवार।
क्यो वो भेद करे इस घर मे, विपदा पाए रे।।3।।

गुरु लेगे अपनी संभाल, बनकर आये रक्षा ढाल।
निश्चिंत होकर रहे सदा हम, मोद मनाये रे ।।4।।

अपना शासक कितना सुंदर, सबके भाग्य बने सिकदर।
"पुण्य" स्नेह पाकर के जीवन ज्योत जलाये रे।।5।।

तर्ज - सरदार थांरी बोली ....

महावीर थारो नित उठ ध्यान लगाऊँ प्रभुवीर।
महावीर! थाने झुक-झुक शीश नमाऊँ प्रभुवीर।।
महावीर जी हो ऽऽ प्रभुवीर ।।टेर।।

कुण्डलपुर मे प्रगट्या त्रिशला मा रा लाल।
सिद्धारथ घर जनम्या, जगती रा भूपाल।।
मगलमय गौरव गाथा थारी गाऊँ महावीर ।।1।।

सत्य, अहिसा, त्याग रो साचो पथ दिखलायो।
अपरिग्रह स्यू रेवणो सुख रो राज बतायो।।
थांरे मारग पर चलकर आनद पाऊ महावीर ।।2।।

जो भी आया चरण मे उसको पार लगाया
चण्डकौशिये नागरा अज्ञ तिमिर मिटाया
ले शरणो थारो भवसागर तिर जाऊ महावीर।।3।।

अप्रमत कर साधना, अपूर्व ज्ञान थे पाया ।
लाखा लोगा ने प्रभु मनोरम पथ दिखलाया।।
थारे "पुण्य" स्यू मै चिन्मय बण जाऊँ महावीर।।4।।

तर्ज - माई न माई ...

आओ आओ महावीर आओ, अंतर प्यास बुझाओ।
फैल रहा अज्ञान यहां पर सच्चा पथ दिखलाओ।
प्रभुवर तू ही तारण हारा, हमको तेरा एक सहारा ।।टेर।।

फैल रही हिंसाये कितनी प्रेमभाव को भूले।
राग द्वेष तेरे-मेरे के झूले मे ही झूले।
मानव मानवता विसराई सद्गुण उन्हे सिखाओ।।1।।

जीओ और जीने दो के नारे खूब लगाये।
मुख मे राम बगल मे छुरी, कहावत आज कहाये।।
अहिंसा की सुराह दिखाकर, सबको पार उतारो।।2।।

स्याद्वाद और अपरिग्रह की, बाते समम न आये।
पैसा परमेश्वर है सबका, तेरा नाम भुलाये।।
छाया है घनघोर अधेरा "पुण्य" का दीप जलाओ।।3।

तर्ज - साजन जी घर आना ...

योगी आया मतवाला, दुनिया मे हुआ उजाला।
जन[2] को लगते व्हाला।।टेर।।

त्रिशला मा रे आगणि ये मे कल्पवृक्ष एक पाया है।
सिद्धारथ रे अन्तरिक्ष पर ज्ञान का सूरज आया है।।
देवो मे उत्सव छाया, खुशियो का तराना गाया।
अहिसा का नाद बजाया। महावीर जी ।।1।।

जिन शासन की धरती पर संयम का महल बनाया है।
परम तत्व की खोज मे तू ने लाखो कमल खिलाया है।।
जिन धर्म की तू ही झील है, दिखलाई अन्तर रील है।
नही रहना अब गाफिल है महावीर जी ।।2।।

हाहाकर मचा था भारी काप रहे सारे प्राणी।
"मित्ति मे सव्व भुएसु" ये गुज उठी अमृत वाणी।।
करूणा का स्नेह बताया नही कोई है पराया।
"पुण्य" ये पथ दिखलाया ।।3।।

तर्ज - कितनी खूबसूरत थे ...

महावीर को हमारी है अभिवदना, श्रद्धा भाव से करते अर्चना।
प्रभु अभिवंदना।।टेर।।

धरती पर अंधकार छाया, ज्ञान का सूरज ये आया।
मेट दी पाखंड माया, देवो ने करी थी तेरी प्रार्थना ।।1।।

भर यौवन मे घर को छोड़ा, वासना से मुख को मोडा।
मोह के बंधन को तोड़ा, पावन हो गई तेरी ये साधना ।।2।।

चंदना को तू ने तारा, अर्जुन का है भाग सवारा।
चण्डकौशिक को उबारा, गिरतो को उठाई तेरी देशना ।।3

तेरी महिमा क्या[2] गाये, श्रद्धा के ये भाव सजाये।
हर घडी तुमको ही ध्याये "पुण्य" करते है तेरी उपासना ।।4।।

तर्ज - पहले प्यार का पहला गम ...

त्रिशला मा के हो नदन, भाव सहित मेरा वंदन।
श्रद्धा थाल लिये करने को पूजन,
तरस रहे है आ भी जाओ भगवन ।।टेर।।

तेरी मूरत मन मे समाई, तेरी प्यास लगी।
सूना सूना ये जग सारा तेरी आस जगी।।
चैन नही पलभर भी मुझ को तेरे दर्श को चाहते है
भाव सहित करते है तेरा अर्चन ।।1।।

हर क्षण मै तो तुम बिन तरसू, पावन चरण को पाने।
क्यो निर्मोही बन बैठे हो पीडा मेरी जाने।
गिन -गिन दिवस बिताते है तन्हाई मन छायी है
जो भी बोलो कर देगे हम अर्पण ।।2।।

सुख-दु·ख दोनो जो भी देगे, हस-हस के सह लेगे।
देर करो ना अब तो भगवन, "पुण्य" के दीप जलेगे।।
दिव्य रुप दिखा दो अपना, कर दो नया सबेरा
खिल जायेगा मुरझाया ये गुलशन।।3।।

तर्ज - कब से आये हो मेरे ...

धन्य हुआ है भारत जन्में महावीर,
माता त्रिशाल की जागी तकदीर,
होऽऽऽ हिसा ही हिंसा थी छाया हाहाकार था।
तुमने किया था अहिंसा से उद्धार था।
सुन सुन सुन सुन वीर प्रभु जय बोले[4] ।।टेर।।

जीओ जीने दो यहां सबका अधिकार है।
जीना सब चाहते करे हर प्राणी से प्यार है।।
तेरी ये वाणी सब धारे क्या बोले हम।।1।।

पीड़ा सभी की तुम समझो एक समान है।
अपनी पराई क्यों करते इन्सान है।।
अपना ये जीवन निखारे क्या बोले हम।।2।।

कोई भी शत्रु ना मित्र है यहां पर।
कर्मो का फल ये बताया हमको ज्ञान कर।।
मैत्री तुम्हारी स्वीकारे क्या बोले हम।।3।।

तर्ज - पंछीड़ा हो ऽऽऽऽ

वदना-वंदना-वंदना-वदना स्वीकारो गुरु अवतारी रे,
सिणगार रा नद म्हाने प्रियकारी रे।।टेर।।

कुभ कलश म्हारे आगणे पायो।
रत्न चितामणी हाथ मे आयो।।
मन इच्छित फल देवे शुभकारी रे।।1।।

मुरझाई कलिया इण बाग मे आवे।
सरसब्ज बणे थारी शरण जो पावे ।।
समता फुंआर लागे सुखकारी रे।।2।।

करुणा नजर थारी एक जो मिले।
श्रद्धा रा फूल फिर उसका खिले ।।
"पुण्य" प्रताप थांरो हितकारी रे।।3।।

तर्ज - सावली सलोनी ...

समता विभूति! तेरे गुण गीत गाये।
श्रद्धा का मंगल दीप जलाये हम, पूज्य प्रवर! तेरी शरण मे आये
अंतर भावो के पुष्प चढ़ाये हम।।टेर।।

तुम अहिंसा के हो हिमालय, मैत्री की धार बहाये हो ऽऽऽ।
तुमने सत्य का सरगम बजाकर, सोये जग को जगाये
हर घड़ी तेरा ध्यान लगाऊँ, हर पल तेरा दर्शन पाऊ
महायोगी! तूही मेरे नैनो का तारा,
तेरे चरण की छाव को पाये हम।।1।।

तुम हो पारस मै हूँ लोहा, तेरा स्पर्श मै चाहूँ।
तेरा शुभ आशीष मिले तो, मै सोना बन जाऊं।।
मेरी नैय्या को पार लगादो, मेरे जीवन को आप जगा दो।
महासिधु! तेरा ही है एक सहारा, तेरी कृपा से मंजिल पाये हम।।2।।

मेरे मन मदिर मे भगवन् तेरा पूजन होगा
मेरे इन होठो पे हरदम तेरा गुजन होगा
इन नयनो मे तुझको बसाऊं, तन-मन तेरे चरण चढ़ाऊ।।
महाध्यानी! करुं बस शासन की सेवा,
तेरी ही भक्ति से "पुण्य" बढ़ाए हम।।

तर्ज - परदेशी - परदेशी जाना नहीं ...

वदन है वदन स्वीकारो मेरा श्रद्धाभाव से भक्ति भावसे।
वदन है गुरुवर नाना हमे अपनाना,
मेरी नैया को गुरु पार लगाना ।।टेर।।

तू ही मेरा एक सहारा जीवन मे।
तन-मन अपना सौप दिया तब चरण न मे।।
कल्पवृक्ष की छाया है मन भावन ये।
पाये सुख आराम ऐसा पावन ये ।।1।।

समता का तुमने सबको नवनीत दिया ।
ध्यान समीक्षण से अपने को जीत लिया।।
प्यासी इस धरती को नव सगीत दिया।
राग द्वेष को त्याग सबसे प्रीत किया।।2।।

मेरी जीवन बगिया को सरसब्ज करो।
मानस मधुवन में सुरभित सस्कार भरो।।
पथ नही भूले ऐसा "पुण्य" प्रकाश करो।
बुझ नही जाये दीप इसमे स्नेह भरो।।3।।

तर्ज - होठो से छू लो तुम ...

मेरा मन ये अर्पण है, मेरा तन ये अर्पण है।
नानेश के चरणो में मेरा सर्व समर्पण है ।।टेर।।

चाहे खोजो इस जग मे, धरती के कण - कण मे।
चाहे स्वर्ग मे तुम ढूढो, पाताल या वन-वन में।।
नही ऐसे मिले गुरुवर ये शरणा पावन है ।।1।।

कभी बुझने नहीं देगे, वो दीप जला देगे।
कभी मुरझा नहीं पाये वो फूल खिला देगे।।
तेरी आज्ञा पर न्यौछावर जीवन है ।।2।।

गुरु द्रोह करुं ना कभी विद्रोह के भाव न हो।
कोई शिकवा न हो मन मे, पर की कोई चाव न हो
श्रद्धा के दीप जले, मेरे मन आंगन में ।।3।।

तेरे उपकारो को हम भूल नही सकते।
गुरु राम दिया हमको शत-शत वंदन करते।।
"पुण्य" खिलता है यहा ये अनुपम शासन है ।।4।।

तर्ज - ए मेरे प्यारे वतन...

ए मेरे नाना गुरु, जैन सघ की आबरू, दो हमे वरदान
तेरे पथ पर हम चले, चाहे सकट हो भले दो हमे ।।टेर।।

प्रेम नदियॉ मे बहे और पीर पराई जाने हम।
विनय गुण हमको सिखाना, समता भाव से जीये हम।।
दुर्गुणों को दूर करे, कर्मो को अब चूर करे।।1।।

दया सरोवर मे नहाए, मैल धो निर्मल बने।
वासना पर विजय पाये, मन मेरा विमल बने।।
ना करे ईर्ष्या कभी, घृणा वैर ना हो कभी ।।2।।

हृदय किसी का ना दुखाये, छल कपट ना हम करे।
सत्य पथ पर ही चले और झूठ से हरदम डरे।।
सेवा हमारा धर्म हो, "पुण्य" का हर कर्म हो ।।3।।

तर्ज - मिल के गाना ...

सबल सहारा, राम तुम्हारा, मा गंवरा का प्यारा, गुरु हमारा।
तेरा ही है एक सहारा, धरती का उजियारा, गुरु हमारा ।।टेर।।

लाखो सूरज चंदा सेभी तेरा तेज अपार है।
अजब अनूठी साधना तेरी महिमा अपरम्पार है।।
होऽऽऽ ज्ञान ध्रुन और विनय गुण से चमके ज्यो ध्रुवतारा।।1।।

नाना गुरु ने देखा तेरा सयम निरतिचार है।
तेरे कधो पर है डाला, शासन का ये भार है।।
होऽऽऽ बढ़े निरन्तर सद्गुण शेखर, करते जय जयकार ।।2।।

दूढनिकाला तुमने ऐसा रत्नों का भडार है।
भूल नही सकते हम गुरुवर तेरा ये उपकार है।।
"पुण्य" खिले है धन्य हुये है पा तेरा ईशारा ।।3।।

तर्ज - पंछी बनूं उड़ती फिरुं ...

बडी खुशनसीब हूँ मै, राम शरण मे,
आज मै आनद पाऊ राम शरण मे ।।टेर।।

इनके चरणो की करे उपासना, इनसे सीखे हम सयम की साधना।
हमने पाया है दिव्य उजारा, अब करना है धर्म प्रभावना।।
त्याग तप ध्यान मे ही रहूँ मगन मे।।1।।

ये पूनम के चॉद है प्यारे, पर इसमे नही दाग काले।
ये सूरज है कितने सुहाने, पर ये नही आग निकाले।।
तेज तेरा ओज तेरा कण-कण मे।।2।।

तेरा सकेत जब-जब पाये ये कदम मेरे बढते ही जाए।
तेरी आज्ञा मे ही हम रहेगे तेरे शासन मे हरदम मुस्काए।।
"पुण्य" प्रवर मोद करे गणवन मे।।3।।

तर्ज - तुम अगर साथ ...

मेरे शासन का दीपक ये जलता रहे,
जिसकी किरणों से कण-कण चमकता रहे।
मेरे शासन का फूल ये खिलता रहे,
जिसकी सौरभ से जन-जन महकता रहे।।टेर।।

राम आये धरा पर उजाला हुआ,
इसकी ज्योति से जग ये निराला हुआ।
तेरी कृपा का स्तोत्र बहता रहे ।।1।।

जीवन दाता उतारे तेरी आरती,
गुण गौरव गाती सदा भारती।
प्रभु प्यार तुम्हारा बरसता रहे ।।2।।

हर ऑखो मे बैठी है मोहन मूरत,
हर श्रद्धा को भाए सुहानी सूरत।
ये सूरज युगों तक चमकता रहे।।3।।

आए स्वर्ग से बढ़कर प्रभाते तेरी,
और चादी से उज्जवल हो राते तेरी।
तेरे जीवन का "पुण्य" ये बढ़ता रहे ।।4।।

तर्ज - करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं ...

मरुधर से इस जीवन को, मधुबन करो ना,
उजड़ी इस बगिया का, प्रभु सिंचन करो ना,
ओ शासन माली [2] ।।टेर।।

विषयो की इन लूओ से हो रहा बरबाद है।
माया की ऑधी ने इसको कर दिया निर्बाद है।।
अब मेघ बनकर बरसो, हरा उपवन करो ना।।1।।

पतझड भी ऐसा आया है, गुण पत्ता टूट रहा है।
मोहक दृष्यो के पीछे, मेरा बाग लूट रहा।।
सरसब्ज बनाकर इसको नदन वन करो ना।।2।।

हर पौधों को गुलजार करे, माली मन भावन है।
ऑखो से करुणा बरस रही, ज्यो बरसे सावन है।।
"पुण्य" महके हर कण-कण इसे पावन करो ना ।।3।।

तर्ज - झुके तेरी मुहोब्बत का ...

प्रभु! वरदान दो मुझ को, बने शुभभावना मेरी।
प्रभु! वो ज्ञान दो मुझ को करुँ आराधना तेरी।।टेर।।

मेरे जीवन के दर्पण मे, स्वयं को ही निहारुं मैं।
अंधेरे मे उजाला हो, स्वय को ही सजाऊं मै।।
उपासक बन प्रभु केवल करुं उपासना तेरी।।1।।

संयम समता की धारा पर चलेगी नाव ये मेरी।
आये तूफान सागर मे, बढ़ेगी नाव ये मेरी।।
तेरी कृपा का हो वर्षण, करु मै साधना तेरी।।2।।

मोह ममता के आकर्षण, लुभाएगे मुझे हरपल।
संभल करके चलू हरदम मिलेगा "पुण्य" का ये फल।।
तेरे चरणो मे रहकर के करुं मै प्रार्थना तेरी।।3।।

तर्ज - फूलों का तारों का ...

सूरज मे चदा मे तुम ही दिखते हो,
धरती के कण-कण मे तुम ही रहते हो,
शासन उपवन मे तुम ही खिलते हो।।टेर।।

तेरी सयम खूशबू से आयी नयी बहार।
तारण तरण है नाम तुम्हारा जप ते सब ससार
प्राणो में प्राण गुरुवर तुम ही भरते हो।।1।।

जाग उठी सोई तकदीरे, पाया सघ महान।
गगा की बहती है धारा, सीच्या नव उद्यान।।
नंदन वन के माली तुम ही लगते हो।।2।।

मेरे दिल के देव सुनो तुम, मेरी एक पुकार।
रीते घट को भर दो स्वामी आशा हो साकार।।
"पुण्य" वरदान पूरे तुम ही करते हो।।3।।

तर्ज - उड़ -उड़ रे ...

सुण-सुण रे म्हारा ज्ञानी रे जीवड़ा राम शरण मे आ जा तू।
कर-कर रे तू वंदन जीवड़ा राम शरण मे आ जा तू ।।टेर।।

सच्चा तीर्थ एक यही है इनके दर्शन कर जा तू ।।1।।

शास्त्रो के है अभिनव ज्ञाता, आत्म खजाना भर जा तू ।।2।।

कल्पवृक्ष सम ये है दाता, मन वांछित फल पा जा तू ।।3।।

सुधा भरी है मजुल वाणी, अपनी प्यास बुझा जा तू ।।4।।

नंदन वन सा बाग निराला, जीवन फूल खिला जा तू ।।5।।

निखिल विश्व के ये उजियारे, "पुण्य" की ज्योति जला जा तू।।6

तर्ज - इक दिन बिक ...

मेरे इस जीवन की पाती हो तुम,
भव से तिरा देना साथी हो तुम।
कर दे उजाला तू मेरे इस घर मे,
मेरे इस दीपक की बाती हो तुम।।टेर।।

तेरा ही एक सहारा मैने पाया,
तेरे ही चरणो मे है सच्चा साया
तू मेरी है ज्योति, इस मन का है मोती।
गुरुवर का नाम बस होठो पर आया,
तरपम, फूल खिले है ये खुशबू मै ले लू
गम का क्या करना है खुशियो से जी लू।।1।।

मेरे इस मंदिर मे तू चिन्मय की मूरत।
खेद सभी मिट जाते है जब देखू तेरी सूरत,
सासो की ये सरगम गीत ये गाये हरदम
भव भव मे चाहू मै तो गुरुवर का शरणा।
तरपम, सूरज तुम, मेरे हो मै किरण बन जाऊ।
तेरे ही चरणो मे "पुण्य" सुख पाऊँ।।2।।

तर्ज - दिल दिवाना ना ...

नाना गुरु तुम जिन शासन की शान हो,
राम गुरु तुम ही लाखो के प्राण हो,
तुम प्राण हो-तुम प्राण हो -तुम प्राण हो मेरे नाथ ।।टेर।।

इस धरती के नाज हो, कलयुग के महावीर हो।
धीरे धीरे ज्ञान का देते गगा नीर हो।
मेरी चाहना तुम हो प्रवर, मेरी साधना तुम हो प्रवर।।1।।

मधुरम सा व्यवहार तेरा, सबके मन को भाया है।
मीठी मीठी वाणी ने दिल सबका लुभाया है।।
कितने वर्ष की है ये तरंग, तेरे दर्श की है ये उमग।।2।।

हर ऑखो की प्यास है, हर सांसो की आस है।
सूने-सूने बाग का तू प्यारा मधुमास है।।
मेरे गुरु की है ये महर, तेरे "पुण्य" की है ये नजर।।3।।

तर्ज - कब से आए हो मेरे ...

कितने खुशहाल है हम राम चरण,
हुये निहाल हम पाके शरण,
होऽऽऽ आयी बहारे इस सघ की धरती पर,
श्रद्धा के दीपक ये जल रहे है घर-घर,
मेरी मन वीणा क्या बोले है सुन सुन सुन सुन।
राम गुण-गुण गाना[2] भवसागर तिर जाना।।टेर।।

नाना गुरु की ये लगती एक तस्वीर है,
रुठे इस युग की जगाई तकदीर है।
मेरी ये धडकन क्या बोले है सुन सुन सुन सुन।।1।।

आयी दीवाली है मेरे घर आगन मे,
हुआ उजाला जीवन के हर कण-कण मे।
मेरी ये सासे क्या बोले है सुन सुन सुन सुन।।2।।

तेरे दर्शन की है प्यासी, मेरी अखियॉ,
शबरी ज्यो देखू मै राम की डगरिया।
मेरा मन हरदम क्या बोले है सुन सुन सुन सुन।।3।।

पुलकित हुये है हम पाकर तेरा नेहा,
बरसा है मानो अब "पुण्य" का ये मेहा।
मेरी रामायण क्या बोले है सुन सुन सुन सुन।।4।।

तर्ज - लाल दुपट्टा उड़ ...

सौंप दिया है तन-मन सारा गुरु के ही चरणार,
मुझको मिली है जिन्दगी और तेरा आधार
माना कि मेरा तू ही है अपना, सारा ससार है सपना।।टेर।।

मुरझाये इस जीवन मे नाथ हमारा आया है,
पतझड से इस उपवन मे साथ तुम्हारा पाया है,
तेरे रग मे रग गई मै तो सारा जग ये भूलकर,
तेरे ही सग आ गई मै सारा जग ये छोड़कर,
लगी दिल में लगन है राम गुरु। करे तुमको नमन है,
राम गुरु। पाना था सो पा लिया अब मै ने प्राणाधार।।1।।

माता-पिता तुम ही हो मेरे, साजन -सखा तुम्ही तो हो,
सौ-सौ प्यार लुटाया मेरे मन- मदिर मे तुम्ही तो हो,
तेरे प्यार के बदले मे अब अपना मै क्या भेट करु,
तू है हमारा, सब है तुम्हारा, प्राणो को ही चरण धरूं,
बीते ना कभी ये दिन राते, तेरी कृपा की ये बाते,
सारा जीवन कर दिया "पुण्य" गुरु पर बलिहार।।2।।

तर्ज - मेरा दिल खो गया है ...

ये वदन है [2] राम गुरु के चरण मे, समर्पण कर जीवन ये।
अर्चना है हमारी तेरी पावन शरण मे।।टेर।।

देख विनय की अद्भूत धारा, सबका मन हर्षाया।
सयमचर्या देख तुम्हारी, जन मानस चकराया।।
पचम आरे मे हमने अरिहन्त का रुप है पाया।
आचाराग सा जीवन तेरा, सबके मन को भाया।।
तू ही समकित का दाता, हम सबका विधाता।
तोडो कर्मो का नाता, तूही दुखियो का त्राता।।
तेरा ही है सहारा, अब तो कर दो किनारा।।1।।

वीर वाणी का शख हाथ ले सबको आज जगाते।
प्रभु आज्ञा का चक्र साथ ले धर्म की राह बताते।।
भाग्य फले है इस शासन के तुम सा नाथ मिला है।
तेरी शरण को पाकर के हम सब का "पुण्य" खिला है।।
तू ही गण का उजारा, तूही प्राणो का प्यारा।
सारा श्री सघ तुम्हारा, माने तेरा ईशारा।।
बढे दिन-रैन आगे, ये ही आशीष मांगे। ये वंदन है ।।2।।

तर्ज - मैया यशोदा ये तेरा कन्हैया ...

वंदन हमारा, अभिनन्दन प्यारा,
तू ही तो मेरे नैनो का तारा।
श्रद्धा की थाली ले, भक्ति की प्याली ले होयऽऽ।
राम गुरु की करें हम आरती ।।टेर।।

शुद्ध भावो का मंदिर बनाया, तेरी मूरत को उसमे बिठाया।
तुझको जब देखा तो तू ही है भाया,
और नही कोई मुझको सुहाया,
मेरा जीना है, मेरा मरना है, सारा जहां भी तेरे चरणा है,
मेरा सहारा तू ही किनारा .... होय ... ।।1।।

मेरा जीवन और मेरी ये खुशियॉं, भेंट करु तुझे सारी उमरियॉं।
एक अर्ज ये सुन लो सावरियॉं, साथ ले जाना मुक्ती नगरियॉं।
द्वार जो आये, खाली न जाये, तू ही तो गुरुवर पार लगाये,
"पुण्य" की ज्योति, बरसे ये मोती होयऽऽ .... ।।2।।

तर्ज - छोटी छोटी गैया ...

छोटा सा ये दीप हरे, सारा अधकार।
छोटा सा ये नाम गुरु राम करे पार ।।टेर।।

सुबह शाम कर लो इनका ही सुमिरन।
कट जायेगा सारे जन्मो का बधन।।
पावन हो जाये तन-मन अपार ।।1।।

बुद्धि के दायक सिद्धि के दाता।
दुखियो के बने गुरु, आप ही त्राता।।
बोधि ज्ञान देने वाले बड़े उपकार।।2।।

इनके जीवन मे है सत्य की साधना।
तन-मन से करे ज्ञान क्रिया की आराधना।।
ऐसे गुरुवर को वदन बारम्बार ।।3।।

धन्य हुए तुम्हे पाकर गुरुवर।
पाचवे आरे के आप है तीर्थकर।।
"पुण्य" कल्प तरु हमने पाया है साकार ।।4।।

तर्ज - ओह रे ताल मिले ...

हम जो चाहते थे तेरा सहारा, हमने वो ही पाया।
जैसी खुशियाँ ढूढते थे हमने वो ही पाया ।।टेर।।

मैं ने देखा था चारो ओर अंधकार था।
मेरे लिए तो सारा रस्ता मझधार था।
ओ राम गुरु 2! बधन से मुक्ति का पथ ये, हमने वो ही पाया ।।1।।

बीच भंवर में नैया, डगमग है डोलती।
कौन बने खिवैया, जीवन ये हारती,
ओ राम गुरु2! मै ने चाहा तारण हारा, हमने वो ही पाया।।2।।

फिरते थे यहा-वहां हम जाये किस और है,
उलझन में उलझे थे हम, पाये कहा ठोर है,
ओ राम गुरु2! समाधान सब "राम" के दर पे हमने वो ही पाया ।।3।

माया ने घेरा मुझ को, विषयो ने मारा था।
पग2 पर ठोकर खाया भव-भव मे हारा था।।
ओ राम गुरु2! "पुण्य" सच्चा चैन हो कैसा हमने वो ही पाया ।।

तर्ज - दिल में तुम्हे बिठा के ...

रामेश को शीश झुका के, श्रद्धा का भाव सजा के
ये वदना करे हम गुरु वदना[2] ।।टेर।।

माता गवरा के प्यारे, नेमिकुल उजियारे
कण[2] मे बिखरे है जिनके गुणरत्नो के तारे।
मूरत एक बना के, मन मे ध्यान लगा के ।।1।।

जिनको पल[2] याद करे हम इनका ही सुमिरन करते।
इनके पावन दर्शन से ही भव[2] के पातक कटते।।
इनको हृदय बिठा के, भक्ति के गीत गा के ।।2।।

जब से प्रीत लगी है तुमसे, ओर न कोई भाया।
चारो ओर आडम्बर देखा, तेरा सयम सुहाया।।
"पुण्य" गुरु को पा के, धन्य बने यहा आके।।3।।

तर्ज - पण्डित जी मेरे मरने ...

राम गुरु करो कृपा की दृष्टी, मुफको शिवपथ दिखा देना।
अंगुली थाम के सयम की राह पर, मुझको चलना सिखा देना।।टेर।।

नदियॉ तरुवर से बढकर के तुम हो महा उपकारी।
नदियॉ जल दे, तरुवर फल दे, तुम करते भव पारी।।
थक गई हॅू जन्म-मरण से मेरा ससार घटा देना ।।1।।

पुद्‌गुलो मे दौड लगाई, जीवन सारा खोई।
स्व को भूली पर में उलझी, आर्त ध्यान कर रोई।।
तेरा साथ मिला है अब तो, मृतक भाव जगा देना ।।2।।

करुणा कर तुम तो हो गुरुवर मुझ पर करुणा लाना।
इस भव मे तो साथ रखोगे, मुक्ति भी साथ ले जाना।।
"पुण्य" का उपहार ये दे के जन्मो का ताप मिटा देना ।।3।।

तर्ज - राजा की आयेगी ...

जो सदगुरु की पहचान, गुणो की है ये खान,
मुझे गुरु राम मिले, होऽऽ सच्चे गुरु राम मिले [2]
ये सबसे महान ढूँढा है सारा जहान ।।टेर।।

कोई तो पचम आरा कह के भोग विषय को जोये।
खान-पान और मौज शौक मे सारा जीवन खोये।।
पर ये अरिहंत के रुप, सिद्धो के है स्वरुप।।1।।

मिलता है सम्मान किसी को हो जाते अभिमानी।
मिथ्या आडम्बर मे उलझे करते है मनमानी।।
कहता है आगम जैसा, ये जीवन जीते वैसा।।2।।

कनक कामिनी मे मन है किसी का ऊपर से वैरागी।
बहला-फुसला शिष्य बनाते, धन दौलत के रागी।।
नही इनमे कोई लेप रहते है ये र्निलेप ।।3।।

ऐसे गुरु निर्गन्थ को पाकर धन्य बना है जीवन।
शुद्ध समकित के आराधन से करना है मुक्ति गमन।।
आराधक मै बन जाऊॅ "पुण्य" ये भाव सजाऊॅ।।4।।

तर्ज - हे प्रीत जहां की रीत सदा ...

हे राम गुरु! तुमको पाकर हम सबका भाग्य सवाया है।
ऐसे अंर्न्तयामी के चरणो में शीश झुकाया है।
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो ।।टेर।।

ये चाद सितारे फूल और कलियॉ, सब तेरे दीवाने है।
जन-गण-मन सब हर्षित होकर के गाये तेरे तराने है।।
हे नाथ! तेरा ये साथ हमे मुक्ति का राज बताया है।।1।।

तुम गंध फूल हम है भंवरे, तुम सागर हो हम है लहरें।
हर सास अधूरा है मेरा, जब तक ना पड़े तेरी नजरे।।
बस चाह यही हम पाते रहे, हर पल[2] तेरा साया है।।2।।

इस हुक्म संघ के सागर में समता के सीप को ढाला है।
नानेश गुरु के आंगन मे सयम का किया उजाला है।।
जीवन दाता इस गणवन मे "पुण्य" का फूल खिलाया है।।3

तर्ज - घर आया मेरा ...

तुमसे बढकर कौन यहाँ।
गुरुवर तू ही सारा जहान ।।टेर।।

कुटुम्ब कबिला छोड दिया, धन से नाता तोड लिया
फिर भी तुम सब से धनवान ।।1।।

अधकार के दीपक हो, इस जीवन के रक्षक हो,
गीता के ही तुम हो ज्ञान ।।2।।

कल्पवृक्ष सम तुम दातार चितामणी भी हो साकार
इस धरती के हो भगवान ।।3।।

मेरी एक ये चाह फले, जीवन बीते चरण तले
“पुण्य” कृपा का हो वरदान ।।4।।

तर्ज - तू दिल की धड़कन है ...

राम गुरु के चरणो मे वंदन है [2]।
इनके दर्शन करने से अरिहंतो के दर्शन है,
ऐसे गुरु हमारे है, कर दे भव से किनारे है।।टेर।।

महाज्ञानी है महाध्यानी, महायोगी है महात्यागी।
आत्म भाव मे लीन सदा ये है अनुपम वैरागी।।
कथनी करनी एक समान, देते सबको सम्यक् ज्ञान ।।1।।

नस-नस मे है शील सुगन्ध, पाई दिव्य समाधी है।
रहते है निर्लेप सदा चाहते नही उपाधी है।।
अंग-अग मे समता जिनके, पग -पग पर संयम झलके।।2।।

ऑखो से बहती रहती, करुणा की निर्मल धारा।
अर्न्तमन ये बोल रहा, गुरुवर की जय-जय कारा।।
"पुण्य" खिला तुमको पाकर चरणो मे बीते उमर।।3।।

तर्ज - इक दिन बिक जायेगा ...

मेरे ये गुरुवर है सबसे महान।
श्रद्धा से झुकता है सारा ये जहान।।
पल मे तिरा देगे जीवन की ये नाव।
बुझते दियो मे भी भर देते ये प्राण ।।टेर।।

अधे को लोचन दे सब को पथ दिखाते।
भटके को मुक्ति की सच्ची राह बताते।।
जो कोई दर आये श्रद्धा से झुक जाये।
सयम की ऊर्जा से सब के कष्ट मिटाते।।
तरपम उजडा हो जीवन तो बन जाये उपवन।
घोर अधियारे मे आये भोर किरण।।1।।

सयम मे रहते है, सयम इनकी वाणी।
सयम लेने आते है कितने भव्य प्राणी।।
ये योगी मतवाले, खोले मुक्ति के ताले।
आजा गुरु की शरण मे सवरे जिन्दगानी।।
तरपम, महावीर का सुमिरन है गजमुनि का सदेश।
खदक की याद है ये, मेरे गुरु रामेश।।2।।

सूखे इस जीवन मे कर देगे ये सावन।
दर्शन तो पावन है नाम भी इनका पावन।।
करुणा के सागर है इस युग के जिनवर है।
अर्न्तमन से तू करले “पुण्य” ये वदन।।
तरपम, बिन्दू मे सिधु सा जीवन है इनका।
गागर मे सागर सा ज्ञान है जिनका।।3।।

तर्ज - घर आया मेरा...

दूर रहे या पास रहे, तार जुड़े तुमसे मन के।
ठुकराओ या प्यार करो, आधार तुम्ही हो जीवन के ।।टेर।।

तू सूरज, मै अधियारा, तीर पे तू मै मझधारा।
पारक हो इस भववन के ।।1।।

इस जीवन के ओ साथी, तुम दीपक मैं हूॅ बाती।
गुल हूॅ तेरे गुलशन के ।।2।।

नस-नस मे है वास तेरा, अर्पण है हर श्वास मेरा।
अरमा हो इस धडकन के।।3।।

एक देह दो प्राण है हम, फिर कैसा अलगाव का गम।
मोती हो इन अखियन के ।।4।।

हरपल तेरा ही सुमिरन, कट जाये सारे बंधन।
"पुण्य" ये स्वर अभिनदन के ।।5।।

तर्ज - आने से उसके ...

ना है तुमको भवसागर पार, आ जाना सच्चे गुरुवर के द्वार।
न हो जायेगी तेरी जिन्दगानी, सफल हो जायेगी तेरी जिन्दगानी ।।टेर।

मठ-मदिर ना इनके सेवा पूजा के भाव नहीं है।।
ऊँचा इनका दर्शन, मान सम्मान की चाह नही है।।
ऐसे ही चरणो मे पार हो जायेगी, तेरी जिन्दगानी।।1।।

द्रा से कर लो वदन, कोई कष्ट तुम्हे नही आये।
ो इनकी उर्जा, महापापी भी पार हो जाये।।
हे सी काया को कुन्दन बनानी है तेरी जिन्दगानी।।2।।

सिद्धो के द्वार खुले है, पर मोह के पर्वत खड़े है।
ज्ञानी गुरु मिले है, क्यो विषयो मे अब भी पडे है।।
"पुण्य" की बगियॉ को हर पल खिलानी है, तेरी जिन्दगानी ।।3।।

तर्ज - मेरा जीवन सफल ...

मुझे मुक्ति सुख दिला दो, ओ राम गुरुवर मेरे।
मेरी नैया पार लगा दो ओ राम गुरुवर मेरे ।।टेर।।

तेरे सिवा यहां पर कोई ना मेरा साथी।
अब तक जल सकी ना मेरे जीवन की बाती।।
आशा की ज्योत जला दो ।।1।।

दुनियॉ मे जब भी भटकू गुरुवर तू राह बनना।
विषयो में जब भी झुलसू, गुरुवर तू छांव बनना।।
कृपा का हाथ उठा दो ।।2।।

तेरी नजर बिना तो कोई काम होना पूरा।
तेरी महर बिना तो हर श्वास है अधूरा।।
"पुण्य" का बाग खिला दो ।।3।।

तर्ज - साजन जी घर आना ...

वंदन करते अभिनदन, अर्पित चरणो मे जीवन
ओ गवरां मॉ के नन्दन[2] स्वीकारो श्रद्धा चन्दन ।।टेर।।

मेरे मन मदिर मे भगवन जलता रहे श्रद्धा का दीप।
मेरे मन सागर मे प्रभुवर खिलता रहे भावो का सीप।।
दुनिया की हो आधी, तन मे हो चाहे व्याधि।
मै पाऊँ पूर्ण समाधी ।।1।।

तुमने ज्ञान सिखाया हमको, सयम पथ दिखलाया है।
एकत्व भावना भरके हमको सिद्धो से मिलाया है।।
क्या[2] उपकार बताये तेरी कृपा जो पाये।
भव जल नैया तिर जाये ।।2।।

जप-तप सयम मे ही बीते मेरे इस जीवन की शाम।
अन्तिम श्वास ये निकले मेरा सामने हो बस गुरुवर राम।।
तेरी करुणा पाये, आराधक हम बन जाये ।
"पुण्य" मुक्ति सुख पाये ।।3।।

तर्ज - होऽऽ पंख होते तो उड़ ...

होऽऽ पर होते तो उड़ आती रे गुरुवर ओ साहिबा।
तेरा दर्श मै पाती रे ।।टेर।।

मेरे गुरु मेरे दिल मे बसे है, कृपा किरण हरदम बरसे है।
जादूगर है कोई निराला ऐसा जादू मुझ मे डाला।।1।।

तन से क्यो हमे दूर किये है, सारा जीवन ये तेरे लिए है।
तेरे संग है जीवन की खुशियाँ कैसे बीते विरहा की घडिया ।।

तेरे चरणो में लीन रहूगी, तेरी आज्ञा मे तल्लीन रहूगी ।
पाओगे तुम मुक्ति का दर है तथास्तु कहकर दो "पुण्य" वर है ।।3

तर्ज - जन्म- जन्म का साथ है ...

श्वॉस-श्वॉस से पालन करे अनुशास्ता तुम्हारी
सघ और संघपति के लिए है जिन्दगी हमारी ।।टेर।।

गण के मदिर मे बैठे है राम गुरु भगवान है।
इनकी आज्ञा का पालन ही सेवा पुजा ध्यान है।।
दीपक बनकर जले हमेशा, सघ के हम पुजारी ।।1।।

जो पाया है इस जीवन मे जन्मो जन्म नही पाया।
जो आया है हाथ हमारे लाखो हाथ नही आया।।
पाई दिव्य कृपा हमने मेटी मिथ्या अधयारी ।।2।।

जैसा गुरुवर का सदेश हो चरण हमारे बढ़जाये।
जैसा गुरुवर का आदेश हो कदम हमारे थम जाये।।
“पुण्य” दो वरदान प्रभु! कोई चाह न जगे हमारी ।।3।।

तर्ज - दुल्हे का सेहरा ...

जिसने मेरी समकित लौ जलाई है,
जिसने मुझ को मुक्ति राह दिखाई है।
उन गुरु के चरणो में ये वंदना,
राम गुरु की करते है अभिवंदना ।।टेर।।

त्याग तप सयम का तू ने दीप जलाया है।
सिद्धि का ये रास्ता हमको बताया है।।
अप्रमत कर साधना श्रेणी पर चढ़ना है।
योगो का निरोध कर कैवल्य वरना है।।
आत्मा का बोध जो करवाई है ।।1।।

तोड दो मोह का ताला खोल लो ये द्वार।
सामने मुक्ति का घर है पाओ सुख अपार।।
गुरुवर ने दिया है हमको आत्मा का ज्ञान।
भूल की इस भूल का करवाया हमको भान।।
"पुण्य" गुरुवर की शरण सुखदाई है।।2।।

तर्ज - आज मेरे यार ...

तीन बार विधिपूर्वक वन्दन करती हूँ .
नमस्कार करती हूँ सत्कार करती हूँ ..
सम्मान करती हूँ ।

हे गुरुदेव!

आप ज्ञान - दर्शन और चरित्र के धारक है
आप कल्याणकारी है। आप मगलकारी है . आप
आनन्ददाता है।

ऐसे गुरुदेव की मै मन से वचन से
और काया से सेवा करना चाहती हूँ .
जिसने मेरी हृदय गुफा मे उजाला किया है
जिसने मेरे सकल्प को फौलादी बनाया है
जिसने मेरी चिन्ता को चिन्तन मे बदला है
जिसने मेरी आत्मा को उर्ध्वगामी बनाया है
उनको मेरे कोटिशः वन्दन

हे गुरुदेव! आप महान् है। मुझे भी वह दृष्टि और
शक्ति प्रदान कीजिए। जिससे मेरा कल्याण हो।

तर्ज - क्या मौसम आया है ...

तेरे नाम जीवन है, तेरे नाम तन-मन है,
तुमको ही अर्पण है जिन्दगी मेरी।
जीवन भर करना है बन्दगी तेरी।।
सांसो की सरगम पर ये गीत है तेरा।
अन्तर की श्रद्धा का तू दीप है मेरा ।।टेर।।

मेरे मन की धरती पर बादल बन छाये।
देखती हूँ जिसको बस तुम नजर आये।।
अंधियारी आंखो की चांदनी हो तुम।
मेरे इस जीवन की रोशनी हो तुम।।
मेरा पल-पल बीते प्रभू तेरी यादों मे ।
जिन्दगी सवरी है आ तेरे हाथो मे ।।1।।

मेरे इस जीवन के तुम बने साथी।
जल गई है मेरी ये सयम की बाती।।
कर्मो की ऑधियां दूर हो जाये।
"पुण्य" की खुशियो का पूर हो जाये।।
खिल उठी है किस्मत तेरा साथ ये पाकर।
पार हो जायेगा मेरी मुक्ति का सफर ।।2।।

तर्ज - ना कोई उमंग है...

ना कोई लुकाव है ना कोई छिपाव है,
मेरी जिन्दगी तो एक खुली किताब है ।।टेर।।

क्या सुनाऊँ तुमको मेरी कर्म कहानी।
पापो की डोली बैठी, पर मे ही सुख को मानी।।
कर्मो का ये फाग है, जन्म-जन्म की आग है।।1।।

विषयो की मधुशाला मे पीती रही मै हाला।
चहु ओर से जलाती, मुझको ये मोह की ज्वाला ।।
आया न विराग है चारो ओर राग है ।।2।।

क्रोधी हूॅ मै हूॅ कपटी, मानी हूॅ मै मायावी।
ईर्ष्या ओर द्वेष दुर्गुण, मुझ पर हुए है हावी।।
सयम का ये स्वाग है, चुंदडी पे दाग है ।।3।।

पापो का मेरा पर्दा खोलू मै तेरे सन्मुख।
आती है शर्म मुझको पाती हूॅ कितना ही दुःख।।
मिट जाये ये आग है, "पुण्य" तेरा साथ है ।।4।।

तर्ज - भूला ना सकोगे ...

सासो की सरगम मे, भक्ति की रुमझूम मे।
तराने तुम्हारे गाती रहूँ।।
सुबह सामने मे, रात सपने मे दर्श तुम्हारे पाती रहूँ ।।टेर।।

मेरे मन के दर्पण में तुम्हे ही निहारु।
मेरी हर धड़कन से तुम्हे ही पुकारुं।।
जब से गुरु संग मन ये रगा है।
दुनिया मे पाया ना कोई सगा है।।
जीवन के पथ मे, संयम के रथ मे आगे कदम ये बढाती रहूँ ।।1।।

सूरज का तेज ये हुआ है सरु।
चाद सा मुखड़ा देखा करुं।।
मेरे दिल मे तेरी ही यादे रहे।
होठो पे तेरा ही नाम रहे।।
मेरे प्राण हो तुम मेरी तान हो तुम।
"पुण्य" तेरा संग पाती रहूँ ।।2।।

तर्ज - कोई जब तुम्हारा ...

कोई जब गुरु का सघ छोड दे,
मिथ्या से नाता खुद जोड ले,
दुनियाँ मे भटका, भटकता रहेगा ।
कोई उसको तारे ना अरिहन्त शरणा, जरा सोच ले ।।टेर।।

अभी डाल पर एक फल है लगा, सोचता है क्यो इससे उल्फत जु
मै खुद अपना ही मालिक बनू, डाल से वो आके जमी पे गिरा ।
जख्मी हुआ और सडने लगा, दुर्गन्ध अपनी फैलाने लगा ।।1।।

मै योग्य हूँ जो भी बकता यहा, देखे वो खुद को कमी है वहा ।
"खाली चणा और बाजे घणा", कहावत ये उन पर लगती जहा ।
पद का जिसको मद है लगा, संघ को छोड़ के जो भी भगा ।।2।

गुरुवर का चितन गुरु ही करे, भावी की चिन्ता गुरु ही करे ।
नाना के ज्ञान की थाह नही, उन जैसी कोई निगाह नही ।
राम क्या उनका बेटा लगे, "पुण्य" गुणो मे सेठा लगे ।
सघ का ताज मिला है जिन्हे,
श्रद्धा से वदन करते इन्हे जय बोल ले ।।3।।

तर्ज - पाना नहीं जीवन को ...

गुरु राम के चरणो में श्रद्धा से वदना
जिनकी वाणी वर्तन मे तप संयम साधना ।।टेर।।

प्रभु आज्ञा की बाध परीधी, चलते और चलाते है ।
रहे सजग जो हर क्रिया मे, सबको राह बताते है ।।
जिन के रग-रग मे रमती है, जिन वाणी देशना ।।1।।

होता है निहाल वो प्राणी, जिस पर नजर ये पड़ जाये ।
पंचम काल मे सद्गुरु पाकर, भाग्यशाली तो तिर जाये ।।
भव-भव के टूटेगें बंधन, करले उपासना ।।2।।

आलोक पुंज हो गुरुवर मेरे एक किरण हमको दे दो ।
और आप से क्या मांगे, बस कृपा का अमृत दे दो ।।
वीतराग की कलियॉ खिल जाये "पुण्य" ये कामना ।।3।।

तर्ज - ए दिल तू उसे भूल जा ...

वदना, गुरु राम को कर,
तुझे ये तार देगे भव से उबार देगे ।
जरा देख तू दिल मे सजाकर ।।टेर।।

याद जब -जब करे सामने ये खडे ।
आये इनकी शरण मे कर्म कैसे अडे ।।
आओ झुक जाये हम, ये है पावन शरण ।
पायेगे हम समाधी गुरु का हाथ हम पर ।।1।।

आधी तूफान हो, खुशी या गम मिले ।
श्रद्धा का फूल ये, मेरा हरदम खिले ।।
चाहे जैसी हो विपदा, गुरु द्रोही बनू ना ।
लाखो हजारो मे, “पुण्य” बस राम गुरुवर ।।2।।

तर्ज - जीवन है पानी की बूंद ...

गुरुवर की श्रद्धा का दीप कौन बुझायेगा!
आधी तूफा मे [2] जलता ही जायेगा ।।टेर।।

मेरे मन की वीणा पर राम गुरु का नाम है ।
रोम-रोम और श्वास - श्वास पर, गुरुवर का ही गान है।
दिल की छवि को [2] कहो कौन मिटायेगा ।।1।।

जब से देखा है तुझको और नहीं भाया मुझको ।
आत्म भाव मे लीन है तू और नही पाया किसको ।।
सर्दी-तपन में [2] मुझे कौन डिगायेगा ।।2।।

क्या डर है मुझको स्वामी, सिर पे तेरा हाथ है ।
बुझ ना पायेगी ज्योति, "पुण्य" तेरा साथ है ।।
सौपा है जीवन तू पार लगायेगा ।।3।।

तर्ज - मिल के नाचे गाये हम ...

तन-मन जिनको अर्पण है, ये है राम गुरु मेरे ।
जिनका हर पल सुमिरन है, ये है राम गुरु मेरे ।।टेर।।

सयम रथ के सारथी बनके मजिल तक पहुचाते ।
भाग्यशाली वो प्राणी है जो इनकी शरण मे आते ।।
पावन जिनके चरणन है ये है राम गुरु मेरे ।।1।।

सूखे मन को सावन कर दे करुणा जल बरसाये ।
प्रभु आज्ञा मे चलकर के शासन खूब दीपाये ।।
मगल जिनके दर्शन है ये है राम गुरु मेरे ।।2।।

ज्ञानवारी की बनके बदली रीते घट को भरदे ।
अधियारे जीवन मे आकर उजियाला ये कर दे ।।
"पुण्य" भाव से वदन है ये है राम गुरु मेरे ।।3।।

तर्ज - आजा तुमको पुकारे ...

राम गुरु को वंदना कर ले इनकी तू सेवा उपासना ।।टेर।।

हर एक मुश्किल तरंग बन जाये ।
हर एक उदासी उमंग बन जाये ।।
पूर्ण हो सारी कामना ।।1।।

भटके हुओ को रोशनी देदे ।
हारे हुओ को जिन्दगी देदे ।।
आँखो से बहे करूणा ।।2।।

दर पे जो आया बना भाग्यशाली ।
खाली जो आया बना ऐश्य शाली ।।
"पुण्य" का बहे झरना ।।3।।

तर्ज - थांने काजलिये बणालू ...

बोलू विधिवत पाठ जोडू म्हारा दोनू हाथ ।
राम गुरु सा ने शीश झुकावा ला।।
म्हारा पाचो ही अग नमावाला ।।टेर।।

म्हारा कषाय भाव मिटाओ जी ।
विषय विकार दूर हटाओ जी ।।
होऽऽऽ म्हारा आतम भाव बढाओ जी गृरुसा ।
म्हारमनड़ा ने मोडू म्हारा राग द्वेष ने छोडू ।।1।।

जन्म-जन्म रा भरम मिटाओ सा ।
म्हाने शुद्ध समकित दिलाओ सा ।।
होऽऽऽ म्हारा सवेग-निर्वेद बढाओ जी गुरुसा ।
साची आत्म समाधी पाऊ सम्यग् दर्शन शुद्ध बनाऊँ ।।2।।

क्षायिक भाव मे रमण कराओ सा।
म्हारा राग-द्वेष मिटाओ सा।।
अविकारी रो पद दिलाओ जी गुरुसा ।
"पुण्य" आशिष मै पाऊँ जल्दी मुक्ति मे जाऊ ।।3।।

तर्ज - ये मेरी आत्मा बने परमात्मा ...

गोविन्द से पहले गुरु परमात्मा ।
तेरे चरणो में ये आर्पित आत्मा ।।टेर।।

विषय - विकार मे भरमाया ।
क्रोध माया मे उलझाया ।।
भव अटवी मे अटका हूॅ ।
संसार सागर में भटका हूॅ ।।
अब तो करना है दुःखो का खातमा ।।1।।

कर्मो के बधन कट जाये ।
सिद्ध बुद्ध हम बन जाये ।।
तेरी चरण -रज मिल जाये।
भव सागर से तिर जाये ।।
मेरी जलती रहे ये समकित की शमा ।।2।।

राम गुरु का सहारा है ।
कल्प तरु की छाया है ।।
मै ने जीवन मे पाया है ।
"पुण्य" कृपा का साया है ।।

तर्ज - मेरा दिल जिस दिल पे फिदा है ...

गुरु कृपा का सहारा पाये जीवन खिलाये जीना सीखाये ।
गुरु महर का ईशारा पाये मन हर्षाये ।।टेर।।

प्रभु आज्ञा की राह बताते ।
अपनी कमिया दूर हटाते ।।
क्रोध अगन को मन से मिटाये ।
कर्म तपन को शीतल बनाये ।।
ज्ञान बताये जीना सीखाये ।।1।।

जीवन मिला है कितना सलोना ।
मिट्टी से तू बना ले सोना ।।
तेरी ये सासे खूट न जाये ।
नर भव तेरा लूट न जाये ।।
शिक्षा सुनाये जीना सीखाये ।।2।।

राम गुरु है परम उपकारी ।
नाम है जिनका बडा हितकारी ।।
सयम पथ मे साथ दिया ।
अपनी शरण मे हमको लिया ।।
"पुण्य" पाये जीना सीखाये ।।3।।

तर्ज - दिल लगा लिया ...

समकित पा लिये मैंने गुरु दर्शन करके3 ।
समाधी पा लिये मैने गुरु ध्यान धरके3 ।। टेर।।

रात मे भी दिनकर बन के करते उजियारा।
मग्गदयाणं गुरु राम का सहारा ।।
होऽऽ पंचम आरे मे मुझे इनसे ही आस है ।
पार करेगे भव से पूर्ण विश्वास है ।।
कृपा पा लिये मैं ने खुद को अर्पण करके ।।1।।

मंजिल पे बढ़ते रहना मिला मुझ को मौका ।
तरना है भव सागर से आई -द्वार नौका ।।
होऽऽ क्षण भगुर सुख की कोई चाह नही ।
सच्चे गुरुवर की पनाह यही है ।।
हिम्मत पा लिये तेरा संगाथ करके ।।2।।

सयम की राहो पर हमको चलाया ।
प्रतिकूलताओ मे जीना सीखाया ।।
तेरी यह शिक्षा हम भूल नही पाये ।
गलती हो कोई गर वही रुक जाये ।।
"पुण्य" पा लिये, तेरा गुणगान कर के ।।3।।

स्वागत गीत

तर्ज - घर आ जा परदेशी

हिलमिल गाये स्वागत गान पधारे आगंणिये भगवान ।
भक्ति भावो के घर[2]- मे दीप जलाये रे ।
छायी है खुशहाली राम अयोध्या आये रे ।।टेर।।

तुमसे सबको प्राण मिले है उजड़े सबके भाग्य फले है ।
लाये है संयम सुषमा की नयी हवायें रे ।।1।।

देते नव जीवन का रुल बिखरे पग-पग पर गुण फूल ।
हर एवता झुम रहा घर गौतम आये रे ।।2।।

पाये तेरी कृपा ज्योति चुन ले गुण रत्नो के मोती ।
तेरी शिक्षाएं इस जग को सदा सुनाये रे ।।3।।

स्वय भू मे जितना पानी जितने तारे है नभ गामी ।
उतनी ही आशा चरणो से दूर ना जाये रे ।।4।।

करते तन-मन अपना अर्पण चरणो मे है पूर्ण समर्पण ।
तेरी आज्ञा पर ही "पुण्य" प्राण लुटाये रे ।।5।।

तर्ज - दुनियाँ का सहारा ...

ात मे नव-नव फूल लिये सपनो की मालिन आयी है ।
ो हे नाथ महर करके भक्ति की माला लायी है ।।टेर।।

भगवान पधारया है घर मे, दर्शन करलो थे जी भरने ।
मंगलमय गीत वधावा है, कण -कण मे खुशियाॅ छायी है ।।1।

क्रा है ये जीवन उपवन बरसा है मानो सावन घन ।
रित सी आज दिशाये है तेरा गुण कीर्तन गायी है ।।2।।

जन-जन का मन हर्षाये है, लगे राम अयोध्या आये है ।
मुख -मुख पर है उल्लास जगा, गूजी "पुण्य" शहनाई है ।।3।

तर्ज - बन्नासा के बागा जाती ...

गुरुवर ब्यावर मे आया, मोत्यां रो चौक पुरावा ।
मंगलमय गीत बधावां है, मै स्वागत गीत सुणावा ।।टेर।।

केशर री बिरखा बरसी, म्हारे आगणिये माई ।
पग-पग पर खुशबू छाई, धरती सारी महकाई ।।1।।

सोने रो सूरज उग्यों म्हारा, सपना सगला फलया ।
मै कद सू बांट जोवता हां, म्हारा आज भाग है जगया ।।2।।

म्हारे घर मे गगा आई, मै तप संयम सू न्हावा ।
कर्मा रो कलमल दूर करा श्रद्धा सिण्गार सजावा ।।3।।

म्हारे जीवन रे दीवले मे संस्कारां रो स्नेह भरो थे ।
समकित री लौ जगाकर मिथ्यात्व दूर करो थे ।।4।।

"पुण्य" वरदान मिल्यो है मैं महिमा कॉई-कॉइ गावा ।
अब राम गुरु मिल्या म्हानै, मै फूल्या नही समावा ।।5।।

तर्ज - मैं ने पायल है छनकाई ...

तेरा स्वागत है शतवार पहनो भक्ति स्वर का हार ।
आये आज बडे मेहमान कि करते तेरी जय - जयकार ।।टेर।।

ये सत-सती है प्यारे लगे हॅसो की कतारे ।
कि कितना स्वर्णिम अवसर हो प्राणी होऽऽऽ ।।
पाये मन वाछित वरदान, पधारे भक्तो के घर भगवान ।।1।।

आया मधुमास यहा पर छाया उल्लास है घर -घर ।
आयी है मगल वेला हो प्राणी होऽऽऽ ।।
छाई है खुशियॉ चहुॅओर सबका मन है भाव विभोर ।।2।।

गुरु है उजले मोती भरे सस्कार की ज्योति ।
"पुण्य" शिक्षा अपनाऍ हो प्राणी होऽऽऽ ।।
कर दे लौहे को भी कचन करले जीवन का परिवर्तन ।।3।।

तर्ज - तू दिल की धड़कन ...

अमरता का संदेशा ले रामगुरु सा आये है ।
त्याग- तपस्या जप-तप की मलय बहारे लाये है ।।
कितना सुन्दर मौका है, तिरना जीवन नौका है .. ।।टेर।।

चातुर्मास का ये अवसर महापुण्य से पाया है ।
ऐसे गुरुवर को पाकर, हम सबका भाग्य सवाया है ।।
जन-जन मे उल्लास भरा, छाया है मधुमास हरा ।।1।।

सजी हमारी ये दुनियाँ जब से साथ मिला तेरा ।
जन्म-जन्म के पुण्यो से मुझको नाथ मिला मेरा ।।
आशीष का ये हाथ रहे कृपा ये दिन रात रहे ।।2।।

तर्ज - ओ यार रे[2] मेरा दिल खो ...

हो आये हैऽऽ राम गुरुसा पधारे, सब का जीवन सवारे ।
सयम ही जिनका जीवन, ऐसे गुरुदेव हमारे ।।टेर।।

सूखे जीवन मे आया है, रिमझिम-रिमझिम सावन ।
आज फली सारी आशाएँ, झुम रहा है तन-मन ।।
हरखे नैना हरखा कण-कण, साथ जो तेरा मिला है ।
महका- महका है ये उपवन, मन का फूल खिला है ।।
भाग्य जागा हमारा, साथ पाया तुम्हारा ।
खुश किस्मत हमारी, मिला तेरा सहारा ।।
रखना करुणा की दृष्टी, करना कृपा की वृष्टी ।।1।।

कब होगी सेवा चरणन की फेर रहे थे माला ।
भाग भले है आज मेरे टूटा अन्तराय का ताला ।।
कैसे करे उपासना तेरी रीति नही हम जाने ।
सर्व समर्पण हे तुमको बस प्रीति यह पहचाने ।।
माने शिक्षा तुम्हारी झेलो श्रद्धा हमारी ।
जो भी होगा ईशारा जीवन कर देगे वारी ।।
मगल कृपा मिलेगी "पुण्य" नैया तिरेगी ।।2।।

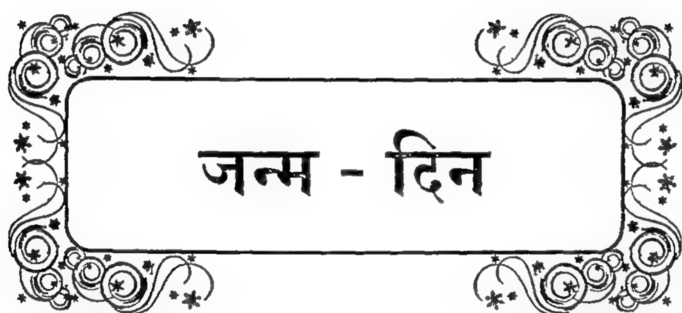
तर्ज - मिल के नाचे गाये हम ...

छाई छटा निराली है गुरुवर राम पधारे है ।
जन-जन मे खुशहाली है गुरुवर राम पधारे है ।।टेर।।

धन्य है धरती धन्य हुए, हम ऐसे योगी पाकर[2] ।
बुझते दीप मे प्राण भरेगे, अन्तर का तम हरकर[2] ।।
आज से यहां दीवाली है ।।1।।

दुर्लभ गुरु का सग मिला है, दुर्लभ इनकी वाणी[2] ।
निरपेक्ष कृपा बरसाई हम पर, मिली ये शरण सुहानी[2] ।।
गोपियो के कृष्ण मुराली है ।।2।।

हर प्रमाद को पीठ दिखाकर जिनवाणी को सुनना[2] ।
स्वाति बूंदे बरसेगी हमे चातक बनकर रहना[2] ।।
पीना "पुण्य" की प्याली है ।।3।।


जन्म - दिन

तर्ज - पंछीड़ा ...

गाओ रे गाओ रे बधाई आज प्रेम भरी रे ।
झुम-झुम-झुम सब ध्यान धरी रे होऽऽऽ ।।टेर।।

माता त्रिशाला रे आंगन मे धूम छायी रे ।
वासी चंदन री सौरभ सुवास छायी रे ।।
मोद पाया, गीत गाया, देव परी रे ।।1।।

सुख वैभव ने त्याग्या वैराग आया है ।
जागी अतर री दृष्टि, वीराग पाया है ।।
साधना -आराधना आ थारी खरी रे ।।2।।

सत्य ज्ञान सूरज रो प्रकाश दियो है ।
अनेकांत अहिसा रो नाद बजियो है ।।
काप गया हार गया पंडित हरी रे ।।3।।

जो भी आया शरण मे सुपथ पाया है ।
मिट्या अर्जून रा अज्ञ सुबोध पाया है ।।
चडकौशिक रोहिणीय चंदना तरी रे ।।4।।

आओ-आओ प्रभु जी है थारी चाह जी ।
भरो "पुण्य" खजानो इण जुग मांही जी ।।
ज्ञान देवो ध्यान देवो विनती करी रे ।।5।।

तर्ज - ये बंधन तो प्यार का ...

श्रद्धा का थाल सजा के, मन का ये दीप जला के ।
भक्ति के गान को गा के, सच्ची ये प्रीत लगा के ।।
गुरुवर का जन्म दिन मनाते है, अन्तर का भाव सजाते है ।।टेर।।

इस माटी के पुतले को तुम, स्वर्ण बनाने आये हो ।
उजडी इस धरती को ही तुम, स्वर्ग बनाने आये हो ।।
मानवता के ओ पुजारी, तेरी महिमा है भारी ।
हम सब तेरे आभारी, चरणो मे जाये वारी ।।1।।

तेरे अनुशासन मे संघ ये नई चेतना पाएगा ।
तेरे सयम की सौरभ से ये मधुवन लहराएगा ।।
सावन की घटा बन आये, कृपा का जल बरसाए ।
गुरु तुमको पा हरसाए "नानेश" की याद दिलाए ।।2।।

धन्य हुए हम धन्य मा गवरां, जिसको ऐसा लाल मिला ।
जनम -जनम के पुण्यो का, मानो इस भव मे "पुण्य" खिला ।।
सदियो तक करो उजाला, जिनवाणी का दो प्याला ।
तेरा शासन है निराला सब कहते आला आला ।।3।।

तर्ज - मुबारक हो तुमको सना ये ...

मुबारक हो तुमको जन्म दिन तुम्हारा ।
युग -युग जिओ ओ गुरुवर हमारा ।।
करे जयकारा जयकारा जयकारा, तेरा होवे ।।टेर।।

जितने ये तारे चमकते गगन मे उतने वर्ष तुम रहो इस वतन मे।
खुशी मे महकते रहो इस चमन मे ।।
तुमसे ही पावन है सघ हमारा ।।1।।

नेमीचद के तुम कुलदीप प्यारे गवरा के पुण्यो के आये नजारे ।
गुण रत्नो के बने हो सितारे ।
तुमने किया है नया ये उजारा ।।2।।

ज्योति पुरुष हम करे तुमको वदन भव2 के काटो हमारे ये बधन
"पुण्य" कृपा का ही बरसे ये सावन।।
गर तू हमारा है सब कुछ हमारा ।।3।।

दीक्षा व चादर

तर्ज - पालकी में होके सवार....

चम - चम चमकता इक चॉद आया रे।
अंबर से धरा पर अवतार पाया रे।
गुरु नाना की ये, उजली चुदड चुंदडिया।।टेर।।

उदयापुर के राजमहल मे, पूज्य गणेशी की पावन शरण मे।
सबका तू सिरताज बना, ताज बना सिरताज बना।।
शासन का हमने श्रृंगार पाया रे, जन - जन मे आनद अपार छाया रे।।1।।

तेरे सद्‌गुण की सौरभ महा, फैली है सुरभि सारे जहा।
महका है जीवन उपवन, ये उपवन जीवन उपवन।।
विकसित ये बगिया दिन रैन पाया रे, जिसमे नित मैने आराम पाया रे।।2

भक्ति भावो का थाल सजाकर, श्रद्धा का कुम कुम अक्षत लगाकर।
करती हूॅ मै आरतीयॉ, आरतीयॉ हां आरतीयॉ
"पुण्य" मदिर मे भगवान आया रे, तन मन मनोरम भेट लाया रे।।3।।

तर्ज - हो साथी चल....

हो जय - जयकार, हो जय - जयकार,
हो जय - जयकार, हो जय - जयकार।
नाना गुरु के दीक्षा दिवस पर मगलमय सत्कार ।।टेर।।

गुरु आज्ञा मे जीवन बिताया था।
उनकी सेवा का प्रण निभाया था।।
मेरे औ गुरुवर! विनय भाव सवाया था।
गणेश गुरु के हर सपनो को, करते थे सत्कार।।1।।

आत्मिक शक्ति बडी ही भारी थी।
कथनी जैसी ही करनी तुम्हारी थी।।
मेरे ओ गुरुवर! समता ज्योती जलायी थी।
इस दुनिया को मिले है गुरुवर तेरे दिव्य विचार।।2।।

हर कदम पर "पुण्य" सहारा है।
हम सबको तुमने उबारा है।।
मेरे ओ गुरुवर! अर्पण जीवन हमारा है।
राम गुरु के इस शासन को कर देगे गुलजार।।3।।

तर्ज - उड़ जा काले ...

मनोरमा श्री जी दुर्ग पधारयां मौत्या चौक पुरावा ।
नाना गुरु री दीक्षा जयन्ति, मंगल गीत मैं गावा ।।
मोडी कुल रा दीप है प्यारा, सिणगार मां रा दुलारा।
नाना गुरु री गौरव गाथा, हिलमिल सारा गांवा ।।
कि करसा सब वंदन, कि शत-शत अभिनदन ।।टेर।।

ज्ञान के सूरज तू ने, सारा दूर किया अंधियारा।
लाखां लोगा ने पाया है तेरा एक सहारा ।।
सागर सी गहराई तुझ मे पर्वत सी ऊँचाई ।
तेरी क्रिया थी अनूठी सबके मन मे भाई ।।1।।

दुर भले हो तन से गुरुवर, पास रहोगे मन से ।
राम गुरु को माना हमने तेरे अपने पन से ।।
तेरी इमरत वाणी सुनने हर मनवा है प्यासा।
"पुण्य" दर्शन कब मिलेगा लगी है मन मे आशा ।।2।।

तर्ज -चुड़ी जो खनकी...

राम गुरु लो वंदना, आया चादर दिवस है आज।
किकरते अभिनंदन ।।टेर।।

नेमीचद के दीप है ये, गंवरा मां के सीप है।
ज्ञान-ध्यान मे लीन है ये, सयम के सदीप है ये।।
भाव सहित करे अर्चना।।1।।

नाना गुरु ने रत्न दिया, शासन पर उपकार किया।
आभारी सारा सघ है, याद करे तेरी क्रिया।।
सफल बने तेरी साधना।।2।।

नयी उमंगे आई है, नयी तरंगे लायी है।
युग - युग जीओ ओ गुरुवर, जीवन ज्योति जगाई है।।
"पुण्य" चरण मे अर्पणा ।।3।।

तर्ज - हो यारा रे... मेरा दिल खो गया है...

ये चादर दिवस तुम्हारा, भाग्य जागा हमारा।
बने अनुशास्ता तुम, सबकी नैंनो का तारा ।।टेर।।

रत्न परीक्षक नाना गुरु ने, ऐसा रत्न तराशा।
जिनशासन को चमकायेगा, पूरी होगी आशा।।
इस चादर का रेशा-रेशा, संघ को किया समर्पण।
तुमने अपना जीवन सारा, गण को कर दिया अर्पण।
नये आयाम ले तुम, नये पैगाम ले तुम।
बढो आगे हमेशा, हजारो काम ले तुम।
हमारी कामना ये, हमारी भावना ये।।1।।

स्नेहदान पाकर के तुम से, लाखो दीप जलेगे।
हुक्म बाग के फूल ये, देखो चारो ओर खिलेगे।
जहा टिकेगे कदम तुम्हारे, वहां स्वर्ग उतरेगा।
जहा उठेगी नजरे तेरी, लाखो नयन झुकेगा।
तेरी महिमा निराली, तेरी गरिमा सुहाली।
सभी खुशहाल बने है, मनाये हम दीवाली
हमारी कामना ये, हमारी भावना ये।।2।।

आज खुशी छाई कण - कण मे युवा दिवस ये तुम्हार
हम अभिनदन करते है, हर सांस - सास के द्वारा।।
कोटि पूर्णिमा चमको भू पर, ओ शासन के चदा।
पुण्य रोशनी पाये हम सब, ओ गवरा के नन्दा।।
गुरु तेरा ये साया, मिले कृपा की छाया।
तिरा दो मेरी नैय्या, बने हो तुम खिवैया।।
हमारी कामना ये, हमारी भावना ये।।3।।

तर्ज - हम होगें कामयाब

हम दिक कुमारियाँ है3 सभी होऽऽऽ।
करने आये अभिषेक, युवा दिवस ये विशेष।
स्वागतम् गुरु राम का करते ।।टेर।।

जन्नत से मिलकर आई है।
भावो की माला लाई है।
पहनो है नाथ सवाई है, राम गुरु होऽऽऽ।।1।।

बिन ताज बने सरताज है।
गुण गाये सारे आज है।
हम सबको तुम पर नाज है, राम गुरु होऽऽऽ।।2।।

गुरु नाना ने हीरा परखा है।
तुझको पा जन-जन हरखा है।
शासन पर ईमरत बरखा है, राम गुरु होऽऽऽ।।3।।

युग - युग तक जन उपकार करो।
विषयो का तुम उपचार करो।
पुण्य श्रद्धा स्वीकार करो राम गुरु।।4।।

तर्ज - घर आ जा परदेशी ...

साधुमार्ग के नवम चांद चमको धरती पर ओ नाथ ।
युवा दिवस पर हम सब मिलकर गीत सुनाये रे ।
अपने अर्न्तयामी को कुछ अर्ध्य चढाए रे ।।टेर।।

तुम पर नाना गुरु की नजर ।
बनाया शासन का शिखर ।।
इसकी शीतल छाया में हम मोद मनाये रे ।।1।।

तुम हो करुणा की तस्वीर ।
जागी लाखों की तकदीर ।।
धन्य हुऐ है तुमको पाकर, भाग्य सवाए रे ।।2।।

संघ है नंदन वन सा सुन्दर ।
हमको स्वर्ग मिला है भू पर ।।
हम सब मिलकर इसकी, सुषमा सदा बढ़ाए रे ।।3।।

आयी गण मे नयी बहार ।
तुमसे आशाये अनपार ।।
बढ़ो निरन्तर प्राण देवता, भाव सुनाये रे ।।4।।

आया ताज दिवस हर्षाई ।
देते सौ-सौ बार बघाई ।।
रहो चिरायु "पुण्य" पुरुष अरमान सजाये रे ।।5।।

तर्ज -मुझे लगी गुरु संग प्रीत....

जिन शासन के ओ वीर! करे हम अभिनदन।
इस युग की ओ तकदीर! करे हम अभिनदन
अभिनदन करते हम वदन।।टेर।।

जब चादर नाना ने ओढाई।
तुमने इसकी आब बढाई।
श्रद्धा की ओ तस्वीर।।1।।

लिखे भाग्य ने ऐसे लेख।
राम से हो गये तुम रामेश।
अल बेले ओ फकीर करे।।2।।

तुमने ऐसा बाग लगाया।
पौधा-पौधा है लहराया।
उड रही सयम की समीर।।3।।

खुशियाँ बाटो तुम पग-पग पर।
लग जाये हम सब की उमर।
पुण्य कर दो भव तीर करे।।4।।

तर्ज -उड़जा काले...

प्रतापगढमें गुरुसा विराज्या मगल गीत मैं गावा।
राम गुरु रे दीक्षा दिवस पर देवा आज बधावा।
नाना गुरु के चरणा मे ही सब कुछ कर दिया अर्पण।
आज्ञा अनुशासन मे रहकर जीवन को कर लिया पावन।
कि करते हम वदन, कि शत - शत अभिनदन।।टेर।।

संयम तेरा सास-सास है, संयम ही जिन्दगानी।
जिनशासन की सेवा मे ही, कर दी सब कुर्बानी।
भव बंधन को तोड़ने खातिर, प्रभु का पथ स्वीकारा।
निश्चित होगा तीन भवो के बाद भव से किनारा।।1।।

नीव के पत्थर बन के, तुम तो प्रण को पूर्ण निभाते।
सकट से समझोता करकें, हसते - हंसते गाते।
कर्म काटने खातिर मै ने, चोला ये है धारा।
वीरता मे सफलता है, सूत्र ये स्वीकारा।।2।।

अबर की काया मे होती, तारो की क्या गणना।
तेरे गुण का वर्णन क्या ये, हमसे होगा करना।
युगो - युगो तक जिओ गुरुवर, कोटि दीवाली चमको
“पुण्य” पथ पर चले हमेशा, ऐसा वर दो हमको।।3।।

तर्ज -भला किसी का...

दीपशिखा बनकर आये हो, इस जग को रोशन करने।
धरती को पावन करने, इस गणवन को गुलशन करने।।टेर।।

अपने तप संयम से गुरुवर तुम संघराज बने सबके।
ताज नही पहना तुमने, फिर भी सरताज बने सबके।।
राम राज्य फिर से आया है, इस संघ पर शासन करने।।1।।

तेरी छाया मे ही पाये, कल्पतरु सी शीतलता।
संयम गंगा मे नहाकर, हम अनुपम पाये निर्मलता।।
भाव सुमनमाला लेकर के आये अभिनंदन करने।।2।।

शांतिदूत बनकर आये हो, सुख की राह दिखाने को।
स्नेहदान करने आये हो, लाखो दीप जलाने को।।
"पुण्य" साथ लेकर आये हो, पतझड मे सावन करने।।3।।

तर्ज - जिस दिल में बसा था प्यार....

शासन का तू सिरताज बना
अभिराम बना गुरु राम बना।
जन - जन का तू गणताज बना,
अभिराम बना, गुरु राम बना ।।टेर।।

कलाकार गुरु नाना ने, अनमोल रत्न को पाया है।
अपने हाथो से घड़कर के, अनुपम आकार बनाया है।।
सूरज बन चमके महामना - अभिराम बना।।1।।

कसकरके कसौटी पर तुझको, शुद्ध निर्मल स्वर्ण सा रुप दिया
लखकर सद्गुण तुझको सारे, सेवा श्रद्धा सयम क्रिया2।।
श्री संघ का तू सिरमोर बना।।2।।

ओ युगल विभूति - युग युग तक चमको।
अविचल ज्यों ध्रुवतारा,
मनोरम सुराह दिखा करके कर दो भव से पारा2।।
माता गंवरा के नदना।।3।।

तर्ज - मां मुझे अपने पास....

गाये तराने आज तेरे, गुरु राम मेरे कि चादर महोत्सव तेरा।।टेर।।

नाना गुरु ने ढूँढ निकाला, रत्नो का भडार निराला।
कैसे भूले उपकार तेरे, गुरु नाना मेरे।।1।।

बीकानेर की पुण्य धरा पर, चादर ओढायी तुमको ये सुखकर।
लाखो का सिरताज बना, गणताज बना।।2।।

नाना गुरु का आशीष तुम पर, देते मुबारक राम गुरुवर।
युगो [2] तक जीओ प्रवर, तुम चमको भू पर।।3।।

तर्ज - कभी खुशी कभी गम....

जीवन है सबसे निराला, तेरा प्यारा है अमृत का प्याला।
शरणा मिला हमको पावन, तुमको करते अर्पण।।
मन मेरा तन, करे गण को नमन।।टेर।।

जीवन के तुम हो खिवैया, पार करो मेरी आशा की नैया।
तेरा ही हमे बस तेरा साथ है, तेरे चरणो मे करते है वदन।।1।।

सा तेरा है साया, जिस मे मिली है सत्य की छाया।
न कभी गम की आंधिया, यहा रहता सदा सुख का सावन।।2।।

जीवन मे रोशनी पायी, मुरझे चमन की कलिया खिलायी।।
जल गयी और शाम ढ़ल गयी, हुआ उजियाला धरती के कण।।3।।

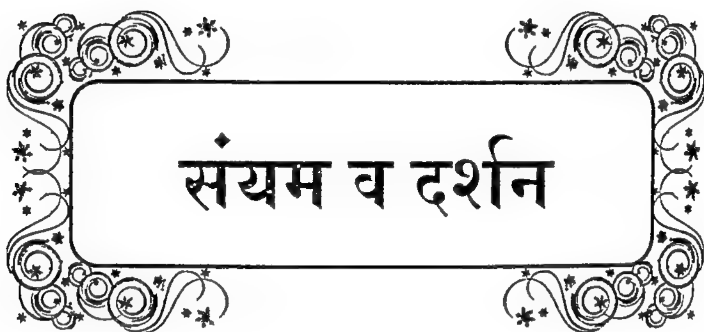
दिवस पर है अभिनदन, श्रद्धा स्वीकारो ओ गवरा नदन।।
जल गया और पुण्य खिल गया, पुज्य नानेश का महका है उपवन।।4।।

तर्ज - सूरज कब दूर गगन से....

श्रद्धा से करते वदन, अर्न्तमन से अभिनंदन।
पुलकित मेरा हर कण करते है तेरा अर्चन।
ये जीवन तो तुझको ही अर्पण है, तेरे चरणो में मेरा समर्पण है।।टेर।।

नाना गुरु से लेकर दीक्षा, जीवन धन्य बनाया।
तप, संयम, आचार धर्म से, शासन को चमकाया।
जन-जन के तुम हो तारक, गूंजा है नाम गगन तक।
हुक्म सघ के अधिनायक, झुकता है मेरा मस्तक।
भक्ति मे तन्मय है, बन जाये चिन्मय है।।1।।

लाखो सुरज चदा चमके, गुरु बिन घोर अधारा है।
कल - कल नदिया सागर बहते, फिर भी प्यासा जग सारा है।
अज्ञान अंधेरा मिटा दो, 'पुण्य' का दीप जला दो।
सद्‌गुरु तुमसा हम पाये, जन - मन का भाग्य सवाये।
वर्षो वर्ष जीओ तुम युगो - युग चमको तुम।।2।।


संयम व दर्शन

तर्ज - पायोजी....

पाऊजी मै तो सयम धन को पाऊ ।।टेर।।

अनत भवो से पार हो जाऊ। शाश्वत सुख को पाऊ।।1।।

चाहे काटे हो मेरे पथ मे। फूलो सी मुस्काऊ।।2।।

श्रद्धा का बल हो, ज्ञान का धन हो। भक्ति मे खो जाऊ।।3।।

सजग रहूं मै हर पल - पल मे। अपना रुप निहारु ।।4।।

विषयों से निर्लेप रहूं मै। "पुण्य" परम पद पाऊ।।5।।

तर्ज - आई बहना मिलकर....

आई जीवन में बहार, छाई खुशियाँ अपरम्पार।
बढते जाए हर पल, हर क्षण मुक्ति पाओ रे।
संयम पथ पर जाये, बाबुल आशीष देवो रे।।टेर।।

आये राखी का त्यौहार, भैया याद मेरी उस बार।
त्याग - तप की बांधो डोरी, आनंद पाओ रे।
समता मे मन रखना अपने दिल को सजाओ रे।।1।।

पली माता - पिता की गोदी, खेली भाई - बहन सहेली।
खेल - खेल मे उनसे मैने शिक्षा पाई रे।।
धर्म - ध्यान के फूल सुहाने, सदा खिलाओ रे।।2।।

आए होली ये रंग - रंगती, दीवाली ये जगमग करती।
अपने दिल को सदा सजाना, कर्म खपाओ रे।
सुख - दुख में सम रहना, अंतर ज्योति जलाओ रे।।3।।

नाना गुरु की शरण मे जाकर, राम गुरु की शरण को पाकर
चद्र तारा सम चमके जीवन खुशियां पाए रे।
मनोरम मय बन जाये हरदम, मगल छाए रे।।4।।

तर्ज -मां मुझे....

मेरे सयम मे बहार आये।
सुनो बाबुल मेरे।
कि दे दो ये आशीष हमे।।टेर।।

जीवन आलोकित करना है हमको।
समता सयम से रहना है हमको।।
करते प्रतिज्ञा आज यही, डिगे प्रण से नही ।।1।।

होली के रग से जीवन रगाना।
आये दीवाली तो मन को सजाना।।
राखी पे आये याद मेरी, बाधो त्याग की डोरी।।2।।

मात-पिता की गोद मे खेली।
भाई बहन और सग सहेली।।
क्रीडा मे ऐसे सस्कार पाये, धर्म मुझको भाये।।3।।

नाना गुरु के शासन मे रहकर।
राम - गुरु की कृपा को पाकर।।
भव भ्रमण को दूर करु, "पुण्य" भव से तरु।।4।।

तर्ज - चूडी जो खनकी....

देवां विदाई आज मै,
याद आए थारी दिन - रात प्यारी कोयलड़ली।।टेर।।

अरमां सजाया हा मन मे हरस मनाया कण-कण मे।
लाडली म्हारी शकुन ने झुला - झुलाया आंगन मे।।
घणी सुहावे थारी मीठी बात।।1।।

सयम पथ पर तू चाली, मात - पिता भाई तजकर।
ममता रो धागो तोड़ी, तू निर्मोही ज्यो बनकर।।
झुर - झुर रोएं थारी मात।।2।।

श्रद्धा भक्ति रा दीप जले ज्ञान ध्यान रा फूल खिले।
मंगलमय हो ये जीवन, सयम से ही मुक्ति मिले।।
थांरे पर नाना गुरु रो हाथ।।3।

तर्ज - होठो से छू लो....

मेरे अभिभावक हम संयम पथ पर जाये।
आशोष हमे दे दो, मुक्ति सुख को पाये।।टेर।।

अनंत काल से हम, भव - भव मे भटक रहे।
मोह ममता मे फंसकर, जीवन मे अटक रहे।।
अब साधना हो पूरी, हम शाश्वत पद पाए।।1।।

चाहे शूल बिछे हो पथ मे, हम फूल समझ लेगे।
बीहड़ पथ को भी हम, आसान बना लेगे।
उत्साह लिए मन मे, आगे बढते जाए।।2।।

मेरे मात-पिता का है, उपकार बहुत हम पर।
भाई और बहना का, मिला स्नेह हमे हितकर।।
हम भूल नही सकते जो प्यार तेरा पाये।।3।।

तर्ज - होठों से छू लो तुम...

आराध्य प्रवर! मेरे, संयम शिक्षा दे दो।
चरणो मे अर्पित है हमको दीक्षा दे दो।।टेर।।

पतझड़ से जीवन को, मधुमास करो गुरुवर।
सूना है मन आगन, उल्लास भरो गुरुवर।
आए है द्वार तेरे, सद्गुण भिक्षा दे दो।।1।।

घनघोर घटाओ मे, शमा ये जलती रहे।
सद्ज्ञान विनय गुण की, खेती ये फलती रहे।।
अब करुं साधना मै, ऐसी समीक्षा दे दो।।2।।

अब तेरी आज्ञा को हम पूर्ण निभाएगे।
सयम के खातिर हम ये प्राण लुटायेगे।
संकल्प बने दृढतर ऐसी शिक्षा दे दो।।3।।

हम अपनी मंजिल पर बढते ही रहे हरदम।
आशीष हमे दे दो मिट जाए सारातम।
"पुण्य" सुख पाए ऐसी इच्छा दे दो।।4।।

तर्ज - जाने कहां गये वो दिन...

देते विदा हम तुम्हे, नैना भर-भर आ रहे।
हमको न भूल जाना तुम।
चाहे जहा भी तुम चलो, काटे हो चाहे फूल बिछे।
हरदम मुस्कुराना तुम।।टेर।।

क्यो निर्मोही बनगई, छोडा है मोह परिजन का।
धन्य तुम्हारा जीवन है, करते सभी अभिवदन है।।1।।

प्यारी लगी है ये तुझे, संयम की शहनाईया।
मंगल तिलक लगाते है, मंगल गीतो को गाते है।।2।।

समता मशाल ले चलो, "पुण्य" के बल पर बढचलो।
डिगना नही है इस प्रण से, झुकना नही इस जीवन से।।3।।

तर्ज - ये अपना दिल तो...

ये संयम पथ तो सुखकारी, जीवन को हम सजायेगे।
धर्म की है ये फुलवारी, जीवन को हम खिलायेगे।।टेर।।

चाहें कांटे बिछे हो, या फूल खिले हो।
पाषाण किले हो नही घबराए।
नानेश बगिया है सुखकारी।।1।।

अहिसा को धारे, हम सत्य स्वीकारे।
अदत्त को निवारे ब्रह्मचर्य प्यारा।
अपरिग्रह है ये प्रियकारी।।2।।

समिति और गुप्ति से बढ़ती है दीप्ति।
तृष्णा से हो तृप्ति यही चाहते।
करे वश मे आतम प्यारी।।3।।

तर्ज - खुशी - खुशी कर दो...

भीगी - भीगी पलके मेरी, कि बेटी तुझे याद करे।
कैसे चली सयम की ओर, हर घडी याद करे।।टेर।।

बचपन मे तुझको झुला झुलाया।
हाथो मे तुझको लांड - लड़ाया।
पल - पल मे आखो मे तू ही।।1।।

नगे पैर बीहड़ पथ पर।
कैसे चलोगी असि धारा पर।
सयम का पथ है कठिन।।2।।

मां का दिल तो मा का दिल है
कैसे सहे ये बडी मुश्किल है।
कैसे तुझ बिन मै रहूं।।3।।

तर्ज - सावन में मोरनी...

सावन में माया बहना पल - पल राची।
गुरुवर्या तेरी शरण मे रानी गुडिया आई।।टेर।।

बाबूल के आंचल से अंकुर ये जो फूटे।
सखियो की गलियो से तेरी यादें छूटे
भक्ति के रंग मे ये रंग गई चुनरिया।
गुरुवर के चरणो मे खिल गई ये कलिया।।1।।

ममतामयी मां की तू एक ही राजदुलारी।
जागी है यादो मे ये तो रातें सारी।
आंखो मे आंसू ये बह रहे है सबके।
कैसे तू जा रही है हमको यू तज के।।2।।

तर्ज - खम्मा - खम्माओ...

बडा ही कठिन है बहना, सयम पथ पर चलना।
लोहे के चने को चबाने के समान।
मेरु भार उठाना जान।
असिधारा पर ये प्रस्थान, जरा सोच समझलो बहना ।।टेर।।

पंच महाव्रत स्वर्ण शिखर को, अपने कधो धरना है।
कोस हजारो नगे पैरो, पैदल तुझको चलना है।
बडे ही कठोर है, यहां के ये आचार।
कहो क्या तुम हो तैयार।।1।।

भू पर सोना, लूचन करना, भुजबल सागर तरना है।
लेने को निर्दोष गोचरी, घर - घर तुझको फिरना है।
सर्दी गर्मी के सब कष्ट है अपार।
कहो क्या तुम हो तैयार।।2।।

कई खम्मा सत्कार करेगे कई गालिया बोलेंगे।
नही सरल सयम का पालन हरपल लोग यो तोलेगे।
समता से ये सब तूझको सहना है प्रहार।
कहो क्या तुम हो तैयार।।3।।

मनमानी ना चले कभी भी, राम गुरु के शासन में।
जीवन भर चलना होगा, तुझको हरपल अनुशासन मे।
सेवा विनय से "पुण्य" सोवे अणगार।
कहो क्या तुम हो तैयार।।4।।

तर्ज - खड़ी नीम के नीचे...

तुम तो चली हो बहना हमको छोड़ के।
हम भी तेरे सग आयेगें, जग से मुखडा मोड के ।।टेर।।

नरतन ये अनमोल मिला, अब इसको क्यो हम खोयगे।
भावी के इन रंग - बिरंगे, सपनो मे क्यो सोयेगे।
संयम पथ पर बढ़े कदम ये, धर्म से नाता जोड के।।1।।

क्षण भंगुर जीवन के सुख को, पल भर मे यो छोड़ दिया।
फूलो से रिश्ता तोड़ लिया, काटो से रिश्ता जोड़ लिया।
हमको भी दे सबक चली तू, सारे बंधन तोड़ के।।2।।

आज बना संकल्प हमारा तेरा साथ निभायेगे।
नहीं डिगेगें अपने प्रण से, हम करके दिखलायेगे।
आयेगी बाधाएं सन्मुख, चाहे लाख करोड़ है।।3।।

लो करते अभिनंदन तेरा, शासन खूब दीपाओ तुम।
वीर संघ मे राम गुरु के शुभ - आशीष को पाओ तुम।
मिल जायेगी "पुण्य" ये मुक्ति कहते है कर जोड के।।4।।

तर्ज - लाल दुप्पटा....

सयम पथ पर तुम चली हो ओ मेरी बहना।
सूना - सूना कर हो बाबूल का अगना।
चली हो क्यो तुम इस पथ पर।
सारा ससार ये तजकर।।टेर।।

बाबुल का ये प्यार बोलता, रो रहे बहना भाई है।
मा की ममता उमड पड़ी, कैसे देगी विदाई है।
छोटी सी ये बाली उमर, फूलो सी कोमल काया।
कितना लाड़ - लडाया, फिर भी छोड चली सबका साया।
कैसे भाया हे तुझ को ये, अब तो बतला दो मुझको ये।
कितना प्यारा सबसे न्यारा, घर का तू गहना।।1।।

बचपन यहां बिताया तुमने, चलना तुझे सिखाया है।
याद रहेगा हमको हरदम, गोदी मे भी खिलाया है।
वो मासूम सी प्यारी बाते, परियो की कहानी सुनती।
इन गलियो मे खेली - कूदी, और सभी सग तुम हसती।
पल - पल मे याद आये हमको, कैसे यू भूलाये हम तुमको
कर रही आज जुदा तू, हमसे प्यार ये अपना है।।2।।

देखो बहना जा रही हो, तो प्रण ये पूर्ण निभाना है।
उतर गई हो जब इस रण मे, शौर्य तुम्हे दिखाना है।
राहे चाहे कैसी हो, संभल - सभल के चलना है।
कितनी विपदा आ जाये, समभावो से सहना है।
जिनशासन की सेवा करना "पुण्य" मुक्ति का सुख वरना
राम गुरु की आज्ञा मे ही तुझको रहना है।।3।।

तर्ज -पल - पल दिल के पास...

हर - पल मुक्ति की और तुम चलती रहो।
संयम पथ पर तुम बढ़ती रहोऽऽ ।।टेर।।

कल तक तुम रहती थी इन परिजनो के सग मे।
राखी की खुशियो मे, होली के इस रंग मे।
तेरी यादों मे महका, घर का हर कोना है।
आज छोड़ चली सबको, हमें आया रोना है।।1।।

तेरी हर सासो मे, संयम की खुशबू हो।
नहीं विषयो की आंधी, और माया की बू हो।
तेरे इस जीवन पर, भगवान की छाया हो।
"पुण्य" तेरे सिर पर गुरु राम का साया हो।।2।।

तर्ज - दुल्हे का सेहरा...

सयम जीवन ही तेरा श्रृंगार हो, गुरु आज्ञा ही प्राणोका आधार हो।
दो घड़ी भी संयम की हो साधना।
पाये मुक्ति का वोही उपहार हो।।टेर।।

मन का सयम, वचन का सयम, काया का सयम।
तीन करण तीन योगो से रहना है हरदम।।
यतना से जीना तुझे हो, यतना का ही ध्यान।
यतना बिन संयम नही है, देह बिना ज्यो प्राण।।
सत्य, अहिसा, ब्रह्मचर्य से प्यारा हो।।1।।

समितो गुप्ति से सजाना ये तेरा जीवन।
महाव्रतो की पालना करना तुझे क्षण - क्षण।
घोर परीषह को सदा समभाव से सहना।
तूफानो मे भी कभी पीछे नही हटना।
देव करे तेरी भी जय - जयकार हो।।2।।

संसार की बाते सभी कर देना अनदेखा।
लाघना मत तुम कभी ये लक्ष्मण की रेखा।
सोच लो अब भी करो, वो ही जो मन चाहे।
तेरे सयम मे कभी भी आच ना आये।
"पुण्य" करना है, तुझे भवपार हो।।3।।

तर्ज -सावन का महीना...

ज्ञान दर्शन संयम से ही बनते है वीतराग
तेल बाती और दीये से ही, जलता है चिराग।।टेर।।

सयम ही सांस तेरा, सयम हो जीवन।
सयम ही वाणी तेरी, सयम हो चिंतन।
संयम बिन नही शोभे ठंडक, बिन चन्दन बाग।।1।।

श्रद्धा की साधना हो, मोक्ष की उपासना।
रच न होवे तेरी संयम विराधना।
भव बंधन सब टूटे जिसको होता विराग।।2।।

बढ़ते रहो गुरु कृपा की छाव मे।
विनय - विवेक हो वे अन्तर भाव मे।
राम गुरुवर पाये "पुण्य" है तेरे भाग।।3।।

तर्ज -सास भी कभी बहू थी...

को भी जिसका इतजार, सयम जीवन है मुक्ति का द्वार2।
न कठिन है मार्ग सगीन है, सोच समझ लो जराऽऽऽ।।
कि, सयम पथ चलना खांडे की धार।।टेर।।

जलते अगारो से भिडना है, भुजबल से सागर को तिरना है।
सभल के रहना, सब कुछ है सहना, रहना कसौटी खराऽऽऽ।।1।।

हिसा को अब दूर भगाना है, झूठ चोरी को नही अपनाना है।
ब्रह्मचर्य पालन ये, अपरिग्रह सेवन ये महाव्रत को समझो जराऽऽऽ।।2।।

सुन्दरी का नाम दिपाना है, राजमति सा प्रण निभाना है।
बाला सम, मृगावती सम, जीवन हो विनय भराऽऽऽ।।3।।

उत्तम कुल उत्तम गुरु पाया है, कलयुग मे गुरु राम का साया है।
आलस ना करता, पुरुषार्थी बनता, "पुण्य" वो मुक्ति वराऽऽऽ।।4।।

तर्ज -वीर गुण गांवा...

मंगल गावां मैं।
हर्ष बधावा, आनद मनावा, राम गुरु दर पे ।।टेर।।

जब तक सूरज चमकेगा, ये शासन अमर रहेगा।
गुरु राम के इन हाथो से ये शासन खूब बढेगा।
भाव शुभ भावा मै।।1।।

संघ दीप ये जलता जाये, हर रोज दिवाली मनाये।
पग - पग पर मेला लगता संयम का झरना बहता।
भाग सरावा मै।।2।।

संघ की क्या महिमा गाये, यहा स्वर्ग सा आनंद पाये।
जो भी इस गण मे आये लाखों "पुण्य" खिल जाये।
खुशी से गावां मै।।3।।

तर्ज -कब से आये हो मेरे...

संयम से करना है तुझको श्रृगार।
सयम से जाना है मुक्ति के द्वार।
होऽऽऽ वीर के पथ पर क्या चलने को तैयार हो।
काम कठिन है, नही बच्चो का खिलवार हो।
सोचो और समझो क्या लेना है सुन4।
व्रत को पूर्ण निभाना ।।टेर।।

जिनवर के पथ का जो कोई करता साथ है।
चारो गति का ये देगा बधन काट है।
तीखी धारा पर ये चलना है सुन4।।1।।

राम गुरु की आज्ञा मे ये जीवन हो।
विनय सेवा मे ही अर्पण तेरा मन हो।
मुक्ति सुख तुझको ये वरना है सुन4।।2।।

ऊंचे कुल जन्मी हो ऊचा तेरा काम है।
चन्दनवाला सा ही करना तुझको नाम है।
"पुण्य" की राहो पे बढ़ना है सुन4।।3।।

तर्ज - तुझे देखकर है जगना...

मेरा सच हुआ है सपना।
गुरु राम का पाया शरणा।।
पहनूं मै संयम बाना।
जीवन मुझको सजाना।।
धन्य हुआ है दिन आज गाऊं, मन हरष[4] जाए।।टेर।।

तेरे पद चिह्नो पे चल, जाऊ मै मुक्ति महल।
आशा फली है मेरी पाकर कृपा ये तेरी।
मिलेगा संयम का ताज-गाऊं।।1।।

देव भी चाहते जिसे, मुझको मिला भाग से।
शौर्य जगाऊ ऐसा एका भवतारी जैसा।
विदेह से पाऊ मुक्ति राज गाऊ।।2।।

जब भी परीषह आये, गज मुनि याद आये
खंदक मुनि सी दृढ़ता, ऐसी हो मुझ मे क्षमता
"पुण्य" हो पूरा सब काज।।3।।

तर्ज - तू दिल की धड़कन है...

सयम से मुझे सजना है, पहनूंगी ये गहना है।
आज्ञा दे दो आप मुझे, जीवन मे कुछ करना है।
जिनपथ पर चलना है, भवसागर तिरना है।।टेर।।

बाबूल के आगन खेली, मैया की गोदी झूली।
भाई-बहन का सग पाई, सखियो के सग मे घूमी।
मुझको सबका प्यार मिला, आशीष का यह फूल खिला।।1।।

रत्नो सी इस चादर मे, दाग नही लगने दूगी।
ओगा - पातरा और मुहपत्ति उसका खूब जतन लूगी।
"जाए सद्धाए" यह वाणी जीवन मे है अपनानी।।2।।

नही कोई चिन्ता करना, मै ऐसा कर दिखलाऊगी।
मात - पिता और गुरुजन का जग मे नाम दीपाऊगी।
व्रत को पूर्ण निभाऊगी प्रण को प्राण सा पालूगी।।3।।

भूल हुई अब तक मेरी, उसकी मै माफी मागू।
रहना तुम सब मिलजुल कर, इतना ही तुमसे चाहू।
"पुण्य" सदा आगे बढना, धर्म साधना से जुडना।।4।।

तर्ज - क्या मिलिये ऐसे लोगों से...

गुरुवर ने कृपा करके ये, मेरा जीवन बना दिया।
दर भटको आशियां मे अब, संयम पथ पर चला दिया।।टेर।।

साथ मिला है जब से तेरा, परमानन्द को पाया है।
मन का दीप जला है मेरा, जब से तुम्हें अपनाया है।
सुख का सावन बर्षा है या, राह जो तू ने दिखा दिया।।1।।

सम्यक दर्शन पाकर तुमसे मुक्ति का वरदान मिला।
खुद को समझु खुद को जानू, ऐसा आतम ज्ञान मिला।
ज्योत से ज्योत जलेगी अपनी, ऐसा नाता बना दिया।।2।।

आनन्द ही आनन्द है यहां पर, गम का कोई काम नही।
बहे साधना का झरना जहा, प्यास का कोई काम नही।
राम गुरु ने करके महर ये "पुण्य" का प्याला पिला दिया।

तर्ज - महावीरा मारग जाई जे...

असार ससार ने छोडी।
मै सयम से मन जोड़ी।
गुरु पास मे आई दौडी।
मुझे दे दो सयम दान, मै खडी हू चरणे आन।।टेर।।

आपके दर्शन पाकर गुरुवर दीक्षा के ये भाव जगे।
गुरु वचनामृत सुनकर मेरी चुदडिया सयम मे रगे।
दो आशीष का मेवा, बन जाऊ चन्दना जेवा
हो जाऊ भव से खेवा।।1।।

तेरे पद चिह्नो पर चलकर, जीवन धन्य बनाऊगी।
सयम रथ मे बैठके मै तो मुक्ति पुरी को जाऊगी।
प्रभुवीर का लिया है शरणा गुरु राम का पाया चरणा।
जिन आज्ञा मे मुझे रहना।।2।।

एक-एक पल बीते मेरा, जैसे वर्षानुवर्ष है।
जल्दी से बिठला दो "पुण्य" प्रवचन माता की गोद है
मै आई ओगा लेकर, झोली पातरा भी रखकर।
मै संयम वेश मे सजकर।।3।।

तर्ज - तुम्हीं मेरे मंदिर...

भोली सी मूरत, स्नेह की सूरत।
कहा चली बहना, छोड के ये अंगना।।टेर।।

बचपन बिताया साथ - साथ मेरे।
खेले कूदे हम संग सग तेरे।
कुछ ना समझ आया, तुझको क्या भाया. कहा।।1।।

कैसे भुलायेगी तू मम्मी की ममता।
कैसे भुलायेगी तू पापा की क्षमता।
भाई बहन का नाता, बचपन की प्यारी बाता।।2।।

फोन का आनद घूमने को कार है।
ब्यूटी पार्लर में करना श्रृगार है।
हट क्यों तू ताने, बात क्यों ना माने।।3।।

सयम का पथ तो बडा ही कठिन है।
जप-तप आराधन मे होना तल्लीन है
संयम मे रहना "पुण्य" भव से तू तरना।।4।।

तर्ज - कोई क्यों प्रीत लगाये...

ये ओगा है बहना, अनमोल गहना।
गर इससे तुझको सजना।
सयम जिन्दगी हो, संयम सासे।।टेर।।

चिन्तामणी सा ये रत्न मिला।
कल्प तरु जीवन मे खिला।
चक्रवर्ती से भी सुख है अपार।
पाने देव भी तरसे, तू जिसको पा हरसे।।1।।

जिस श्रद्धा से सयम लिया।
उसी श्रद्धा मे जो भी जिया।
मुक्ति के सफर को पार वो करे।
जिनाज्ञा मे रहना सभल कर चलना।।2।।

प्राण जाये पर प्रण ना जाये।
कष्ट तुफा मे ना पीछे आये।
कर्मो का करना है तुझ को अत।
समभाव मे जिना "पुण्य" रस पीना।

तर्ज - तुम्हीं मेरे मंदिर...

भोली सी सूरत, स्नेह की सूरत।
कहां चली बहना, छोड़ के ये अंगना।।टेर।।

बचपन बिताया साथ - साथ मेरे।
खेले कूदे हम संग संग तेरे।
कुछ ना समझ आया, तुझको क्या भाया .कहां।।1।।

कैसे भुलायेगी तू मम्मी की ममता।
कैसे भुलायेगी तू पापा की क्षमता।
भाई बहन का नाता, बचपन की प्यारी बाता।।2।।

फोन का आनंद घूमने को कार है।
ब्यूटी पार्लर मे करना श्रृंगार है।
हट क्यो तू ताने, बात क्यो ना माने।।3।।

संयम का पथ तो बड़ा ही कठिन है।
जप-तप आराधन मे होना तल्लीन है
संयम मे रहना "पुण्य" भव से तू तरना।।4।।

तर्ज - कोई क्यों प्रीत लगाये...

ये ओगा है बहना, अनमोल गहना।
गर इससे तुझको सजना।
सयम जिन्दगी हो, सयम सासे।।टेर।।

चिन्तामणी सा ये रत्न मिला।
कल्प तरु जीवन मे खिला।
चक्रवर्ती से भी सुख है अपार।
पाने देव भी तरसे, तू जिसको पा हरसे।।1।।

जिस श्रद्धा से सयम लिया।
उसी श्रद्धा मे जो भी जिया।
मुक्ति के सफर को पार वो करे।
जिनाज्ञा मे रहना सभल कर चलना।।2।।

प्राण जाये पर प्रण ना जाये।
कष्ट तुफा मे ना पीछे आये।
कर्मो का करना है तुझ को अत।
समभाव मे जिना "पुण्य" रस पीना।

तर्ज - चंदा छिप जा रे...

संयम ज्योति है हो .संयम मोती है।
कोई मोक्ष ना जाये संयम बिना।
संयम आंखे है होऽऽ संयम पॉखे है।
कोई पंछी उड़ ना पाये पख बिना।।टेर।।

संयम श्वास हो, संयम आश हो, संयम हो जिन्दगानी।
प्रभु आज्ञा पर गुरु आज्ञा पर हो जाये कुर्बानी।
गुरु की छाया तले, हो सद्गुण पौध फले।।1।।

संयम से ही कट जाते है, जनम - जनम के बंधन।
जो संयम लेते है उनको, सुर-नर करते वंदन।
सयम सुख की खान, होऽऽ संयम है वरदान।।2।।

दोय घड़ी भी संयम आये हो जाये भवपारा।
अनन्त भवी जीवो ने यह प्रभु का पथ स्वीकारा।
जीवन धन्य करो, "पुण्य" भाव भरो।।3।।

तर्ज - बुरा ना कहो....

तेरे दर आए, श्रद्धा से भर जाए, भव से तर जाए।
शत - शत दीप जलाये, गुरुवर तेरी शरण को पाए।। टेर।।

शिल्पकार सच्चे हम, पाए जड मे कमल खिलाये।
नव परिधान दिया है हमको, जीवन आज सजाए।
महिमा अजब अनूठी तेरी क्या - क्या हम सुनाए।।1।।

डगमग करती नाव हमारी डोल रही मझधारा।
तुम हो नाविक पार करो अब तेरा एक सहारा।।
आधी और तूफानो मे भी, तू ही पार लगाए।।2।।

इस उपवन के तुम हो माली, मेरा फूल खिला दो।
सद्गुण की बहारो से इस जीवन को महका दो।।
"पुण्य" की सौरभ भर दो इस मे, कभी नही मुरझाए।।3।।

तर्ज - जहां डाल - डाल पर....

रुँ रुँ पुलक उठे आनद से, हर्षित तन मन सारा।
प्रभु पाये दर्श तुम्हारा।
श्रद्धा दीप समर्पित करते, कण - कण आज हमारा ।।टेर।।

भाव विभोर बने है गुरुवर, कैसे आज बताए।
नाच उठा, मन मोर हमारा, खुशियां नही समाये।।
तेरी ज्योति लेने आए, कर दो अब उजियारा।।1।।

मानो राम गए थे वन मे, बन करके वनमाली।
आज खुशी छायी प्रागंण में, आयी नयी दिवाली।
चौदह वर्ष से आये भगव्न, पाये तेरा सहारा।।2।।

मूर्छित मन को प्राण मिले, गुरु दो सजीवन बूंटी।
ज्ञान दान लेने को आए, तुमसे जीवन घूटी।।
तेरी "पुण्य" महर से गुरुवर होगा भव - निस्तारा।।3।।

तर्ज - धीरे - धीरे....

प्यारा - प्यारा थारा दर्शन है,
दर्शन है [2] हा दर्शन है। करा [2] थाने वदन है वदन है
आया सुनहरा मौका है, तिर जावा जीवन नौका है।।टेर।।

आनद रो यो साचो है दरबार, तन-मन- पावन हो गयो आज अपार।
म्हारे श्वास मे म्हारे आश मे, थारो एक ही ध्यान है
म्हारे सास2 मे गान है।।1।।

क्या उपहार चढावा इन चरणार, तन मन म्हारा थारे पर न्यौछावर
भक्ति खरी, श्रद्धा भरी, देख लो म्हारा भाव है
बस थारी एक ही चाव है।।2।।

थारी वाणी मे ईमरत बरसे, सुणवा ने लाखा रो मन तरसे।
मैं आया हा, थारी छाया मा, खिल गया म्हारा भाग है।
मिट जावे मायली आग है।।3।।

महावीर रो रुप है गुरु नानेश, गौतम गणधर जैसो गुरु रामेश।
थारे चरणा मे थारे शरणा मे पावा साचो ज्ञान है।
थे देवो पुण्य रो दान है।।4।।

तर्ज - हो ठों से छूलो....

गुरुवर के दर्शन कर, पाये महरबानी है।
तुमने ही संवारी है, मेरी जिन्दगानी है ।।टेर।।

कुछ भी नही मेरा है, जो है वो तेरा है।
तेरे बिना इस जग मे, चहुं ओर अधेरा है।।
दो ज्ञान ज्योति हमको, ये अनुपम ज्ञानी है।।1।।

मेंरे मन मंदिर मे, श्रद्धा के फूल खिले।
बस एक तमन्ना है, चरणो की छांव मिले।।
तेरी पलको के तले, जिदगी ये बितानी है।।2।।

हम भूल न पाएगे, तेरे एतबारो को।
जन्मो तक याद करे तेरे उपकारो को।।
"पुण्य" इस नैय्या को अब पार लगानी है।।3।।

तर्ज - भला किसी का कर....

आज तुम्हारे दर्शन पाये, मिल गई है मजिल हमको।
दो जहां की खुशियां ये मानो हो गई है हासिल हमको ।।टेर।।

तेरह वर्षो बाद विधाता आज खुशी का लेख लिखा।
आज गगन मे चंदा देखा, आज फूल ने हसना सीखा।
तेरी पलको के साये मे रखना है सामिल हमको।।1।।

सागर मे जितना है पानी, उतनी ही है चाह मेरी।
करुणाकर इस पामर पर, रखना करुणा की निगाह तेरी।
इन चरणो से दूर न करना, मिले यही महफिल हमको।।2।।

तेरे बाग के फूल है हम तो खुशबू इसमे भरना है।
सघ गगन के तारे है हम रोशन इसको करना है।
"पुण्य" मिला है साया तेरा, नही कोई मुश्किल हमको।।3।।

तर्ज - इक प्यार का नगमा है....

आज दिवस निराला है, तेरा दर्शन आला है।
तेरी कृपा ऐसी है गुरु, अमृत का प्याला है।।टेर।।

तु एक समन्दर है, ममता की है लहरें।
जिसकी गहराई मे, शिक्षा के रत्न भरे।।
गुण एक - एक चुनले बन जाए माला है।।1।।

तेरा जीवन है ऐसा, बरगद का एक साया।
जिसमे हमने पायी, संयम की ये छाया।।
पतझड ना कभी आये, ना गम की हो ज्वाला।।2।।

हम चिन्मय बने गुरुवर, तेरे चरणों में आकर।
भव सागर तिर जाये, तेरी ही महर पाकर।।
तू "पुण्य" का है सूरज कर दो ये उजाला है।।3।।

तर्ज - सजना तू मत जाइजे....

म्हे थारा दर्शन पाया।
हिवडे मे हर्ष छाया।
म्हाने राम गुरु है भाया।।टेर।।

धन्य धन्य दिन आज है म्हारो, थारा चरणा आया हा।
थारी निजरियां पडता ही, मै अपणो भाग सराया हा।
आ एक अरज थे सुणजो, चरणा मे माने रखजो।
थे दूर मति अब करजो।।1।।

आखा तीज और दीवाली, राखी पूनम या होली।
गुरु चरणां मे आज मिलया है, सारा महोत्सव खुशहाली।
म्हे सगला तिरथ करया, म्हे थारो ध्यान ही धरया।
खिलगी है मन री पर्‍या।।2।।

आज फली सबरी री आशा, कण - कण आनंद छायो है।
राम ने देख्या हिवडो हरस्यो, मन रो कोड पुरायो है।
म्हे थारी सेवा करसा, "पुण्य" रा मेवा भरसा।
भवसागर खेवा तरसा।।3।।

तर्ज - तुमसे मिली नजर कि....

तेरे हुए दर्श कि मेरे भाग्य खुल गये।
ऐसी मिली शरण[3] कि मेरे भाग्य खिल गये।।टेर।।

जन्म - जन्म के तुम साथी, जैसे दीपक की बाती।
पार लगानी है तुमको मेरे जीवन की पाती।
तुमसे लगी लगन[3] कि...।।1।।

तुमने दिया है इतना प्यार, खीचें आये इस दरबार।
तुमसे ही पायेगे हम, इस जिन्दगी का असली सार।
बरसा कृपा नयन कि[3]...।।2।।

मेरी मंजिल राम गुरु, मेरे दिल में राम गुरु
क्यो तुफां से घबराये मेरे साहिल राम गुरु
"पुण्य" बना ये मन, कि-मेरे भाग्य खिल गये।।3।।


औपदेशिक

तर्ज - दे दे मुझको सुदृष्टि प्रवर...

नववर्ष तेरा अभिनदनम्, करते सभी सुस्वागतम्।।टेर।।

बीत गया गत बीत गया, अब उसकी क्या चर्चा करे।
सुख और दुःख गतिमान है, समभाव अंतर मे धरे।।
जीवन बने ये मंगलम्।।1।।

नव ज्योति जीवन मे जगे, और शुभ सकल्प हमारा है।
नही डोले डगमग हम कभी, चाहे घोरतम अधियारा हो।।
अविचल रहे सुमेरु सम।।2।।

हमको अपना ही स्वय स्वर्णिम इतिहास बनाना है।
सत्कर्म ऐसा हो महा "पुण्य" मय ज्योति जगाना है।
हो प्रभु चरण मे समर्पणम्।।3।।

तर्ज - ज्योत से ज्योत...

धर्म के दीप जलाते चलो, घोर अधेरा मिटाते चलो।।टेर।।

मोहमाया की नीद मे सोये, काल अनता बीता।
आर्य श्रेत्र उत्तम कुल पाये फिर भी जीवन रीता।
नरभव का लाभ उठाते चलो।।1।।

सत समागम जब मिल जाये, इनसे लाभ उठाये।
प्रभु की वाणी सुनकर इन से, श्रद्धा की ज्योत जलाये।।
सत्पुरुषार्थ जगाते चलो।।2।।

भौतिक सुखो मे क्यो भरमाये, क्षण भगुर है जीवन।
"पुण्य" खजाना अपना भर ले, अरिहंत शरण ले पावन।
भव्य भावना भाते चलो।।3।।

तर्ज - राम नाम के हीरे मोती...

प्रभुवर मन मंदिर मे आओ, ध्यान लगाऊं घडी घडी।
अंतर ही अंतर मे प्रज्ञा दीप जलाऊं घड़ी - घडी।।टेर।।

बाहर ही बाहर में भटका, भीतर का नहीं ज्ञान किया।
भरा पडा है अखूट खजाना, उसका अंकन नही किया।
करे समीक्षा अब तो अपनी, पर क्यो देखू घड़ी-घडी।।1।।

राग द्वेष की लहरें उठती, मन सागर मे लहर-लहर।
मन बदर ये फुदक - फुदक कर, दौड लगाता इधर-उधर।
प्रिय - अप्रिय की अशुभ भावना, मै विसराऊं घड़ी - घडी।।2।।

क्रोध मान माया और लोभ की, परते अंदर जमी हुयी।
नि: सग रह जीना चाहूँ पर, विषयो की नहीं कमी हुयी।
कीचड़ मे ज्यो रहे कमल, निर्लेपता पाऊं घड़ी-घडी।।3।।

प्राणी मात्र के लिये प्रेम की, निर्मल गगा धार बहे।
मंगलमय हो जीवन सबका, करुणा के शुभ भाव लहे।
मैत्री सेवा समता के नित सुमन खिलाऊं घड़ी - घड़ी।।4।।

गुरु नाना ने ध्यान योग का सही समीक्षण रुप दिया।
[illegible] “पण्य” राह को दिखा दिया।

तर्ज - संग्राम जिन्दगी...

दो दिन की जिन्दगी मे, स्थिर क्या रहेगा!
जब काल तेरा आये जाना तुझे पडेगा।।टेर।।

दुनिया में चाहे मानता, अपने को शाह सिकन्दर।
नही साथ जाए कौडी, जाना है सबको तजकर।।
सच मान ले, यही तू कर्म तेरा लडेगा।।1।।

रगरुप मे सजा तन, मिट्टी का है खिलौना।
फूटेगा एक दिन ये, फिर किसका रोना धोना।
अध्यात्म भाव से ही भवसिधु से तिरेगा।।2।।

निस्सार है यहां पर संसार की ये माया।
सच्चा है धर्म प्यारा, प्रभुवीर ने बताया।।
सुरज न अस्त होगा "पुण्य" तेरा खिलेगा।।3।।

तर्ज - इक प्यार का नगमा है...

मानव तेरा जीवन, ये बहता पानी है।
जो आये जाते सभी नही कोई निशानी है।।टेर।।

ओस बिन्दु की उपमा ये, बतलाती साफ यही।
जीवन क्षणभंगुर है जरा सोच ले बात सही।
नही अमर कोई रहता, तू समझ ले प्राणी है।।1।।

स्वभाव को भूला तू विभाव में लीन बना।
इन्द्रिय सुख में फूला, जो दुःख का मूल बना।
किंपाक फल सम है, ये भोग दुःख दायी है।।2।।

चिन्मयता तज करके पुद्‌गुल से प्यार किया।
लाभ से लोभ बढे, तृष्णा अनपार किया।
कपिल के जीवन की बन गयी कहानी है।।3।।

दुर्लभ नरतन पाया "पुण्य" करणी करले।
अंतर को शुद्ध कर के, भवसागर तू तर ले।
आगे बढ़ते जाना यदि मजिल पानी है।।4।।

तर्ज - बस यही अपराध...

जिदगी मे कौन तेरा और मेरा है।
चार दिनो की चांदनी फिर घोर अधेरा है।।टेर।।

उगता सूरज वो तो अस्त होता है।
ये समय अनमोल क्यो विषयो मे खोता है।
जाग जा अब भी समझ कितना बसेरा है।।1।।

जन्म और मृत्यु नही है हाथ मे पगले।
छोटा सा जीवन तुम्हारा काम शुभ कर ले।
कुछ दिनो तक ही यहा पर, सबका डेरा है।।2।।

फूल बनकर ही यहा तू मुस्कुराएगा।
शूल बनकर के कहा तू प्यार पायेगा।
कर सदा तू "पुण्य" ये मिट जाये फेरा है।।3।।

तर्ज - सावन में मोरनी बनके...

जावे रे जीवन री घड़ियां, पल-पल जावे[2]।
मानव तन ये पाया, क्यो ना समझ मे आवे होऽऽ[2]।।टेर।।

चार दिनों के नजारे, चार दिनों के ये साथी।
जीवन के इस सफर मे बुझ ना जाये बाती।
तेरी इन श्वासो का टूटे शीश महल।
नफरत की दुनियां से जल्दी तू निकल।।1।।

सागर तट पे बैठा गहरी प्यास लिये तू।
पर मे ही सुख खोजे मृगतृष्णा मे जिये तू।
छोटी सी जिन्दगी मे कितनी है चाहे।
पूरी न होती तो भरता है आहे।।2।।

चौराहे पर खड़ा है मंजिल की आशा लेके।
तपती धूप में झूलसे, क्यों न छांव को देखे।
अपना घर खोज रहा दर-दर मे जाके।
"पुण्य" तू भीतर मे क्यों ना अब झाके।।3।।

तर्ज - लेके विदाई हमें...

ले ले सहारा प्रभु नाम का तू।
धर्म बिन तो होगा नही काम का तू।।टेर।।

शून्य के आगे शून्य लगाये।
नही उसका कोई है मोल बताये।
बन जा अभी भी गुरु राम का तू।।1।।

आज को छोड क्यो भावी की सोचे।
कभी भूत का तू क्यो रोना है रोये।
प्याला ये पीले प्रभु जाम का तू।।2।।

मन को जगा ले ये आतम मना ले।
"पुण्य" कर्म करे सिद्धि को पा ले।
वासी बनेगा उसी धाम का तू।।3।।

तर्ज - ये जिन्दगी उसी की...

ये साधना उसी की है, जिसने मन को मोड़ दिया।
जिसने तन को साध लिया।।टेर।।

"मित्ति मे सव्व भूएसू", सब प्राणी से प्यार हो।
कौन अपना, कौन पराया, भेद का नही द्वार हो।
ये भावना उसी की है जिसने मैत्री धार लिया।।1।।

अनुकूलता में जीते है प्रतिकूलता मे हसते है।
बाहर से हटकर सदा, खुद ही मे जो रहते है।
ये शक्तियां उसी की है जिसने आत्म ज्ञान किया।।2।।

राग नही है द्वेष नही, नही वासना नही खेद है।
मन के सागर मे जो उतरा, पाया वो आनंद है।
ये चेतना उसी की है जिसने "पुण्य" पा लिया।।3।।

तर्ज - मेरा जीवन...

काल खड़ा है सिर पे तेरे, फिर भी तू सोया।
पापो का जहरीला पौधा जन्मो से बोया।।टेर।।

चचल लहरो पर टिकाया ख्वाबो का ये महल।
एक पल के बाद वो जायेगा सागर तल।
सिकन्दर भी कल्पना की दुनिया मे खोया।।1।।

ढलती जाती है उमर बढ़ती है आशा।
रह गये रावण के सपने खूट गई सासा।
प्यार, वफा और वादो मे तू जीवन भर रोया।।2।।

झूठे है रिश्ते और नाते कोई नही साथी।
दीप से तन मे जगा ले धर्म की बाती।
क्यो नहीं "पुण्य" के सच्चे मोती तू पोया।।3।।

तर्ज - ए मेरे दिले नादान...

मै क्षमा श्रमण साधक मुझे क्रोध नही करना।
विषयो का करके वमन, इन्द्रियो का दमन करना।।टेर।।

परभाव का त्याग करुं, स्वभाव में रमन करु।
जो कर्म उदय आये उसको स्वीकार करुं।
मैत्री के भाव रहे, सुख दुःख मे सम रहना।।1।।

शूलो मे फूल जैसे सब विपदाओ को सहूं।
जन-मन के जीवन में बन प्रेम की गंगा बहूं।
नही खटके आंखो मे ऐसा अंजन बनना।।2।।

मैं अपने जैसा ही व्यवहार करुं सबसे।
छोटे से जीवन मे क्यों बैर रखूं किससे।
जो सब को भष्म करे वो आग नही बनना।।3।।

उड़ते मन पंछी को मंजिल पे विराम मिले।
मुक्ति की नगरी में "पुण्य" के फूल खिले।
जीवन के अंतिम मे पण्डित मरण मरना।।4।।

तर्ज - जीवन है पानी की बूंद...

वक्त तोहै उडता पछी, फर उड़ जाये रे।
रोके ना रुकता कोई हाथ ना आये रे।।टेर।।

इसका पल-पल गाता है, क्षण भगुर का गाना है।
आया बंसत जहां पर है पतझड भी तो आना है।
सपनो की दुनिया मे क्यो भरमाये रे।।1।।

छोटे से इस जीवन मे सभल नही क्यो जाता है।
दुनिया की इस भाग-दौड मे कौन साथ मे आता है।
झूठी कहानी तुझे सच ना भाये रे।।2।।

वर्षो की क्या सोचे है आज मिला सो कर ले रे।
नाव मिली भवसागर मे तरना है सो तरले रे।
अवसर मिला है "पुण्य" तिर जाये रे।।3।।

तर्ज - अगर तुम मिल जाओ...

जो दूजा भव पाऊं वो मेरा महाविदेह मे हो।
प्रभु ऐसा ही वर मागू जन्म तीर्थकर घर मे हो।।टेर।।

वर्ष जब आठ का होऊं संत का सग मै पाऊं।
धर्म सुनकर जगे आतम वहां वैराग्य मै पाऊं।
नही बाधा आवे मेरे सयम सफर में हो।।1।।

हजारों लोग मेरे सग सयम की राह पर चाले।
सूरज चंदा सजग जैसी मेरी यह साधना साधे।
धन्य होगा दिन वो, श्रद्धा की लौ जिगर मे हो।।2।।

करुं मास - मास की तपस्या, मेरे सब कर्म कट जाये
श्रेणि आरोहण कर "पुण्य" मुझे कैवल्य मिल जाये
अंतिम सथारा कर वास मेरा मुक्ति दर मे हो।।3।।

तर्ज - मेरा दिल खो गया है...

ओ भवरा रे   तू कितना है दीवाना, नही अपने को जाना।
सिमट के इस कमल मे, बना है तू मस्ताना।।टेर।।

छाया है ये घोर अधेरा, सूरज ये जो डूबा।
मुरझा गया है फूल ये प्यारा, किस्मत मानो रुठा।
तू कितना मदहोश बना है इस रस को पीने मे।
आशाओ का महल बनाया चंद क्षण जीने मे।
क्यो तू भूला है इतना, समझ जीवन है कितना।
सीमित श्वासे बची है, कर पुरुषार्थ अपना।
ये बधन तोड़ दे तू, ये नेहा छोड दे तू।।1।।

उगेगा सूरज ये फिर से मै बाहर आऊगा।
मस्त गगन मे उडकर मै तो गीत यही गाऊगा।
आज की संध्या रस पीने का आनद मै क्यो खोऊ।
कुछ पल का ही जीवन है मै क्यो ना मौज उडाऊ।
ये ऐसा सोचना ही, ये ऐसा बोलना ही।
काल हाथी के आगे, तरु का तोडना ही।
नही कुछ भी बचेगा, कमल ये ना खिलेगा।।2।।

मानव! तू भी सोच जरा इन विषयो मे गाफिल है।
राग के बधन मे क्यो उलझा, तेरा मासूम दिल है।
भवरा तो अनजान था, इतना तू तो समझले प्राणी।
मदहोशी मे क्यो खोये तू छोटी सी जिन्दगानी।
धर्म से प्यार कर ले, "पुण्य" घट को तू भर ले।
समा बुझने से पहले सफर तु पार करले।
[illegible] तेरा हो रहा है, फिर भी तू सो रहा है।।3।।

तर्ज - स्वागत में है रोशन...

जैनी होके अपना धर्म क्यो भूला।
सिद्धो जैसा हो के भी जग में रुला।।टेर।।

सुबह - सुबह नहाना धोना, रात में भी खाना सोना।
नवकारसी तप तू नहीं जाने, दिन रैन लगा तू खाने।।1।।

अश्लील पहने तू कपड़े, जिससे अंग-अंग झलके।
अश्लील फिल्मो में जावे, धर्म स्थान तू नही आवे।।2।।

लाखों की पूंजी जोड़े, फिर भी सुकृत नही होवे।
सचित पुण्यवानी खोवे, पर भव खर्ची नही जोडे।।3।।

ये धर्म तुझे ललकार करे, मानवता चित्कार करे।
अपना शुद्ध आचार बना, "पुण्य" उच्च विचार बना।।4।।

तर्ज - पल - पल दिल के पास...

कल -कल करते तेरा दिन बीतरहा।
जीवन घट तेरा यह रीत रहा।।टेर।।

तेरी सासे खूट रही तेरी आसे छूट रही।
मदहोशी मे तेरी जिन्दगानी लूट रही।
तू ने सुख को चाहा पर दु.ख का भार लिया।
सब कुछ तु तो हारा, अपना मझधार किया।।1।।

पग-पग पर चिताए नही कोई है अपने।
छोटे से इस मन मे तेरे कितने है सपने।
सपने तो है सपने नही कोई है अपने।
इस वक्त ही तू लग जा, गुरु राम को भजने।।2।।

अनमोले नरभव के सद्गुण सारे लूटे।
सब बिखरे है मोती एक माला मे गूथे।
सार्थक कर ले जीवन, गुरु राम की महर मिली।
तू भाग्यवान कितना, "पुण्य" ये नजर मिली।।3।।

तर्ज - मैं जमुना तट पर....

आ रातडली बीतेला, पंछीडो उड़ जावेला।
अठे चार दिना रो रहणो, मानो सद्गुरु रो कहणो ।।टेर।।
अब तो संभल जा नही कोई रहसी।
स्वार्थ रा रिश्ता थांरा पल में बिखरसी।
सांसा री डोरी थारी टूट रही है।
प्यारी आ दुनिया थारी छूट रही है।
नहीं है कोई यहां अपना, सब आखखुली सपना।।1।।

भोर भए पंछी धुन ये लगाये।
जागो रे जागो बीता वक्त ना आए।
समय कहे मैं तो नदियां की धारा।
हर पल बदलता हूँ रुप अपारा।
समझ जा अब भी ओ प्राणी।
मिली "पुण्य" की जिन्दगानी।।2।।

तर्ज - अंखियो के झरोखे से...

कुछ सोच जरा मन, भव-भव भटका है।
कितना सहा तू नें ।।टेर।।

एक भव था तेरे पास जहा दुःख ही दुःख पाया।
कितनी करुण कहानी है, नही क्षण भर सुख पाया।
कभी मारा-काटा तुझको, परमाधामी सताये।।1।।

मूक प्राणी बनकर के नही कुछ भी बोला है।
सारी उमर बोझा ढोया, क्या तू ने सोचा है।
झर - झर बहे आसू कोई करुणा ना लाये है।।2।।

नर - भव मे आकर भी खाया - पीया है।
धर्म नही भाया तुझे पशुओ सा जीया है।
धन और परिजन मे ये जीवन लगाये है।।3।।

देव गति मे जाकर भी दिव्य भोगो को भोगा है।
नही व्रत किया नही धर्म किया नही तू तो जगा है।
"पुण्य" अब भी सभल जा नर देही पाये है।।4।।

तर्ज - ओ साथी रे तेरे...

ओ बंधु रेऽऽऽ.. माया की छाया से तू बचना।
रुप से फसायेगी देह में लुभायेगी।
ऐसे जादूगर से डरना।।

क्रोध तो इसका बांया हाथ है, कभी लड़ाये कभी रुलाये।
ये चिनगारी बडी भयंकर, पल मे दावानल सुलगाये।
प्रेम मिटाती है स्वार्थ बढाती है, इससे बचकर रहना।।1।।

अंहकार का भूत जो लगता, जिस का इससे पाला पड़ता।
खुद ही खुद को समझे, सब कुछ बुद्धि पर है ताला जडता।
अकड़ना सिखाता, विनय भुलाता इस से बचकर रहना।।2।।

लोभ है इसकी रचना बुरी, सब पे चलाये मीठी छुरी।
पाप का ये बाप कहाता कर दे भाई-भाई की दूरी।
बेचे ईमान को, आन को-शान को इससे बचकर रहना।।3।।

मोह की लीला है भारी, रुप बदलकर आगे आता
ऐसा मकड़ का जाल बिछाता, सबको अपने बीच फंसाता।
कभी हंसाये कभी रुलाये, इससे बचकर रहना।।4।।

मिथ्यात्व के रंग अनेको सब पे अपना रग जमाता।
जो माया से बच के रहता, वो ही प्रभु को दिल मे बसाता।
"पुण्य" तू कर ले, गुरु को सुमर ले, भव सागर से तिरना।

तर्ज - ये ढम^2 ..बाजे ढ़ोल रे ढ़ोला रे...

ये पल - पल खूटे श्वॉस रे, जागो रे।
दिन - दिन बढती आस रे जागो रे, नही है जग मे कोई सारऽऽऽ
अरिहत ही तेरा आधार।
इस आतम का सच्चा साथ रे जागो रे।।टेर।।

छोटासा ये जीवन मिला है, पापो का मल धोले।
जन्म - जन्म से सोया पड़ा है, क्यो नही आखे खोले।
कभी ना बुझेगीऽऽऽ . बढती जायेगी भोगो की प्यास रे जागो रे।।1।।

मिलन के साथ जुदाई होती, आशा के साथ निराशा।
नैया के साथ तूफान बना है, जन्म के बाद है जाना।
यही है सच्चाई सोच जरा तू, सत्य का कर ले प्रकाश रे।।2।।

दान दिया नही, धर्म किया नही, फिर पीछे पछताये।
मतलब के है सगी साथी, वक्त पे काम ना आये।
चेत रे होऽऽऽ अब तो मनवा पुण्य का कर ले विकास रे. ।।3।।

तर्ज - प्यार दिवाना..

साधना से जीवन का उद्धार करना है।
बैठ गये है संयम नौका हमको तिरना है।।टेर।।

क्यों सोया चेतन तू जरा उठ जा।
ओ प्यारे पछी तू अब उड जा।।
मोक्ष के मार्ग पर अब हमको चलना है।।1।।

तप - त्याग सयम मे शौर्य दिखा।
तोड़ के सारे बंधन मुक्त हो जा।
झूठी जग की प्रीत है ये झूठा सपना है।।2।।

कदम बढ़ाले अपने सांझ ढल रही।
"पुण्य" के दीप की ज्योत जल रही।
ले नया उत्साह हमको आगे बढना है।।3।।

तर्ज - दी जो वीरा ने संदेश...

यो है स्वारथरो ससार, थांने जीणो है दिन चार।
निकालो मानव भव रो सार, नरतन अणमोलो।।टेर।।

लाख चौरासी मे फिर आयो, नरक गति रा दुःख सह-सह आयो।
क्षेत्रिय दैविक कष्ट अपार, कलह वेदना अपरम्पार।।1।।

सुरलोक मे भी था भोगवासी, इन्द्रिय सुख मे बण्या विलासी।
भोगा स्यू राख्यो अनुराग, नही जाण्यो हो करणो त्याग।।2।।

पशु योनि मे था अज्ञानी, जीणे री तू ने कीमत नही जाणी।
खाणे-पीणे रो ही ध्यान, जिण सू रात-दिन परेशान।।3।।

दुर्लभ देही मानव री पायी, फिर भी क्यो माया मे उलसो हो भाई।
जप-तप सयम ने आराधो, जनम[2]. रा "पुण्य" थे साधो।।4।।

तर्ज - ताल पे जब ये...

दो दिन की ये जिन्दगानी मिली।
उगा है सूरज भोर सुहानी मिली।।टेर।।

बागों में जब फूलखिले तो कितना प्यारा लगता है।
मुरझाएगा, बिखर जाएगा जब डाली से गिरता है।
सब स्वार्थ के रिश्ते कब साथ है रहते
होश मे आ, संभल तू जवानी मिली।।1।।

सूरज के आते ही कलियां डाली पर खिल जाये।
भंवरा गुन-गुन कर आता है जब तक रस है आये।।
रस सूख गया, भंवरा उड़ गया।
क्यो ना समझा तुझे भी नादानी मिली।।2।।

तेरी सांसे चलती चलती कब जाने रुक जाये।
फिर भी क्यों नही मन मदिर मे, धर्म का दीप जलाये।।
क्यो ना वीर भजे, "पुण्य" जीवन सजे।
मानव जीवन प्रभु की मेहरबानी मिली।।3।।

तर्ज - बिंदिया चमकेगी..

दिन ये बितेगे, राते आएगी, यह कालचक्र तो चलता रहे।
सुख भी आयेगा, दु:ख भी आयेगा तेरा जीवन दीप तो जलता रहे।।टेर।।

झूठी आशा, मिलती है निराशा क्यो सपनो मे खोया।
पायेगा तू फल भी वैसा जैसा बीज है बोया।
क्यो भरमाया है झुठी माया है, तेरे कर्मो का फल तो मिलता रहे।।1।।

किस से करते मुहोब्बत पगले, यहा कोई ना है तेरा।
डाल छोड उड जाये पछी स्वार्थ का है बसेरा।
नाता जोड़ा है सबने तोडा है फिर क्यो तू इससे ममता करे।।2।।

आया अवसर तू भजले जिनवर समय ये बीत रहा।
बूद - बूद कर जीवन घट ये तेरा रीत रहा।
तुझको जाना है, क्यो दीवाना है, तेरा "पुण्य" कलश तो रिसता रहे।।3।

तर्ज - उड़ जा काले...

नाभि मे खुशबू है फिर भी, मृग कितना अनजान।
कस्तूरी को ढूढ़ता रहता वन - वन हर स्थान।
कौन उसे समझाये आखिर क्यो इतना अनजान।
बाहर मे क्या देख रहा है, भीतर का कर ज्ञान।
कि गुरु तुझे समझा रहे[4] ।।टेर।।

पानी बीच मे मीन है रहती फिर भी कितनी प्यासी।
पनघट सूखा रहता है तो, कौन आयेगा प्रवासी।
पर मे ही सुख मान रहा, क्यो सोच जरा नादान।
नहीं जायेगा साथ तेरे, धन - दौलत ये मकान कि।।1।।

चंदा बिन क्या चादनी है, सूरज बिन क्या ज्योति।
ज्ञान बिना जीवन है सूना, पानी बिन ज्यों मोती।
अज्ञान अंधेरा छाया है क्यों, सोच जरा नादान।
"पुण्य" करणी कर ले प्यारे, दो दिन का मेहमान कि।।2।।

तर्ज - कोई जब राह न..

कोई क्यो आस लगाये, क्यो ख्वाबो मे खोये।
कि पल - पल बीती जाये, तेरी जिदगी तेरी सासे।।टेर।।

जीवन चमन ये खिल रहा है।
तुझको अमन ये मिल रहा है।
काल की ये आधी आयेगी एक बार[2]।।
जब पतझड़ आये, तो फूल मुरझाये कि।।1।।

सरगम की राग मे मृग खो गया।
मोह ममता की नीद सो गया।
वीणा की ये राग सुरीली लग रही[2] ।
जब बधन मे आये, तब समझ ये पाये।।2।।

दीपक पर परवाना है क्यो
भंवरा कमल पर दीवाना है क्यो।
राग मे ये इतना बना है नादान
जब मौत है आये तो "पुण्य" काम आये।।3।।

तर्ज - जाने क्यों लोग..

चंद श्वासें है, कितनी आशे है।
खोया सुख चैन है कितना बैचेन है।
जाने क्यों लोग जहां मे जिया करते है।
अमी के बदले जहर ये पिया करते है।।टेर।।

अनित्य है सारा नदियां की ये धारा।
स्थिर नही कोई यहां किसका सहारा।
सब लूट जाता है, सब खूट जाता है।
लाखो कमाया है यहां सब छूट जाता है।
फिर भी न जाने क्यो है दीवाने।
धन पे मरते है पाप करते है।
नाम झूठा प्रभु का लिया करते है।।1।।

वन - वन ढुंढ रहा कल्पवृक्ष की धुन मे।
हर पत्थर को परखा पारस की उलझन में।।
कितने ही अरमा है कितना आसमा है।
हर ओर देखो तो यहां कैसा समा है।
लाखो सपने है न ये अपने है।
झूठी माया है झूठी काया है।
क्यों नही "पुण्य" जीवन मे किया करते है।।2।।

तर्ज - चाले रे..

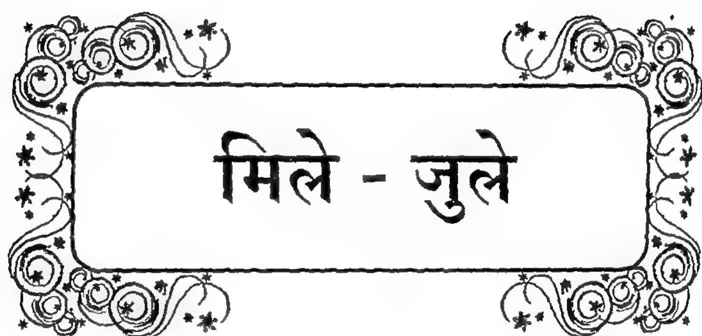
सोचो - सोचो रे थांने अठे कितो रहणो[2] .।
परमातम रो नाम ही है साचो शरणो।
अरिहन्ता रो नाम ही है साचो शरणो।।टेर।।

जिनवाणी रो घटो बाज्यो, अब तो नीद उड़ावो[2]।
मानव जन्म मिल्यो है चोखो विरथा मती गुमावो।।1।।

ऊची - ऊची आशा थारी क्षणभर मे मिट जावे[2] ।
जवानी रो जोश ओ थांरो हाथा मे बिक जावे।।2।।

सोना चादी रे गहणा मे, बणगया थे दीवाना[2]।
मौत आवेला था रे माथे छूटे ला खजाना।।3।।

दुनिया रा है झूठा वादा, झूठा सारा नाता[2]।
"पुण्य" धर्म थे कर लो भाया, परभव मे सग जाता।।4।।


मिले - जुले

तर्ज - चंदा छिप जारे..

आयी दिवाली होऽऽऽ . छायी खुशहाली
घर-घर रे आंगन मे मगल दीप जले।।टेर।।

वीर प्रभु केवल पाकर के करी तीर्थ स्थापना।
ज्ञान दर्शन चारित्र मुगतपथ बतलायी आ साधना।
पावापुरी आया ओ होऽऽऽ. पावस ठाया ओ,
हस्तीपाल राजा रा देखो भागफले।।1।।

नवमल्ली नवलच्छी राजा आया प्रभुरे पास हो।
सोलह प्रहर वागरी वाणी आगम बोध यो खास हो।
बणिया बुद्धाण हो नमो सिद्धांणऽऽऽ...
कार्तिक बदी अमावस को मोक्ष चले।।2।।

गौतम ज्ञान अभयरी बुद्धि शालीभद्र री सिद्धि हो।
कयवन्ना सौभाग्य मिले और महावीर री सिद्धि हो।
प्रभु ने ध्यावो रे होऽऽऽ.. मगल गावो रे
दुःख द्रारिद्र थारो सारो दूर टले।।3।।

माटी रे दिवले री ज्योति जले है पर बुझ जावे।
ज्योति जले जद भीतर री, तो अंधारो नहीं आवे।
प्रेम री पूजा कर होऽऽऽ.. रह तू मिल जुल कर रहसी
'पुण्य' लक्ष्मी था रे चरणा तले।।4।।

तर्ज - मां मुझे अपने पास..

बीस बोलो की साधना हो आराधना हो,
कि तीर्थकर गोत्र बंधे।।टेर।।

अरिहन्त सिद्ध और सूत्र सिद्धान्त की,
गुणवन्त गुरु और स्थविर भगवन्त की।
बहुश्रुत तपस्वी की भक्ति करे, स्तुति करे।।1।।

ज्ञान का उपयोग रखे हमेशा।
समकित का पालन होवे हमेशा।
विनय सहित जो ज्ञान करे, निज ध्यान धरे।।2।।

दोनों ही काल प्रतिक्रमण हो वे।
इसका कभी अतिक्रमण ना होवे।
व्रत नियम निर्मल बने उज्जवल बने।।3।।

शुद्ध भावों से ध्यान धरें जो।
बारह प्रकार से तपस्या करे जो।
अभय सुपात्र दान देवे, सम्मान देवे।।4।।

सेवा करे कुल संघ और गण में
साता उपजाए सबके जीवन मे
सबके प्रति हो मैत्री मेरी, बढे शक्ति मेरी।।5।।

अपूर्व ज्ञान को पढ़े - पढ़ावे।
श्रुत धर्म से मन को सजावे
प्रभुवर के पथ की प्रभावना हो उपासना हो।।6।।

जो - जो भी भावना शुद्ध ये भावे।
चारों ही संघ मे दीपे दीपावे।
तीनो ही लोको में चमके सदा, "पुण्य" महके सदा।।7।।

तर्ज - चांद आहें भरेगा ...

लाखो उपकार तेरे उनको हम याद रखेगे ।
तेरे गण बाग को हम प्रभु आबाद करेगे ।।टेर।।

बीज बोया जो तुमने तरु बन लहराया ।
शीतल छाया मिली है, जिसमे जीवन पाया ।।
तेरे आभारो का हम, कैसे अनुवाद करेगे ।।1।।

महका गुलशन सुहाना, ये तो श्रम था तुम्हारा ।
करते आराम हम सब, कैसा अद्भूत नजारा ।।
पौधे - पौधे मे मिलकर, हम सदा खाद भरेगे ।।2।।

तेरा खाना औ पीना, तेरा जगना और सोना ।
सघ के हित मे ही तेरा हर काम होना ।।
बने साकार सपना यही सवाद करेगे ।।3।।

मिले आशिष तेरा, हर कदम बढते जाये ।
राम अनुशास्ता मे जीवन अपना सजाये ।।
"पुण्य" नानेश की धुन मे हम अहलाद करेगे ।।4।।

तर्ज - होठों से छूलो तुम...

चंदना के भाग्य जगे, खुद तीर्थ पति आये।
पावन हो गया आगन, मेरा रु रुं हरसाये।।टेर।।

कर्मोदय के कारण, चहुं ओर बधे बंधन।
मै तीन दिनों की हूं भूखी प्यासी भगवन।
नही बावन भोग मिले उड़द बाकुले है पाये।।1।।

ये द्रव्य तुच्छ है पर, बने भाव शुध्द मेरे।
आतिथ्य लाभ देकर मेरा उद्धार करे।
क्यो लौट रहे प्रभुवर, दिल भर - भर कर आये।।2।।

करुणा करके मुझ पर करूणा बरसाई है।
लेकर के दान मुझ से अब महर कराई है।
भव-भव के बंधन है प्रभु तु ने कटवाये।।3।।

तुम कल्पतरु स्वामी, मुझको भी दान मिले।
संयम की भिक्षा दो मेरा भी "पुण्य" खिले।
तेरे ज्ञान की बगियां में मुक्ति का फल पाये।।4।।

तर्ज - तुम दिल की धड़कन...

आत्म चितन मे जीना है, प्रेम का अमृत पीना है।
नही किससे है बैर मेरा, नही कोई है गैर मेरा।।टेर।।

मित्र सभी ये जीव मेरे, जन्मो से नाता इनसे।
आत्म तुल्य समझू सबको, फिर घृणा द्वेष हो क्यो किससे।
क्षमा भाव को धरना है, किसी को कटु नही कहना है।।1।।

जीवन की पहचान करे, बन जाएगे हम चिन्मय।
महावीर सदेश सुना नही रहना हमको मृणमय।
कितना पावन धर्म है ये, काटेगे अब कर्म है ये।।2।।

मन मदिर का द्वार खुले, शिव सुन्दर दर्शन होगा।
शुभ भावो का दीप जले, "पुण्य" ये मन पावन होगा
सवत्सरी पर्व मनाना है मैत्री भाव बढाना है।।3।।

तर्ज - आयी खुशियों की बाहर..

आए करने चातुर्मास, छाया कण - कण मे उल्लास।
कवर्धा का भाग्य खिला है मगल गाए रे।
धर्म ध्यान के शुभ दिन आये, पुण्य कमाए रे।।टेर।।

पायी गुरुदेव की कृपा, मानी गुरुवर्या की आज्ञा।
गांव - गांव और शहर - शहर मे घूमते आये रे ।।1।।

आयी सावन की ये घड़िया, लग जाये तपस्या की ये झड़िया।
ज्ञान कमाई करके सारे कर्म खपाये रे।।2।।

नंदनवन सा सघ यहॉ का, गुरु भक्ति ही रग यहॉ का।
महर हुयी है राम गुरु की आनंद पाये रे।।3।।

तर्ज - प्यार हमारा अमर..

जाने क्यो तू व्यसनो मे डूबा, छोटे से इस जीवन मे।
जैनी हो के भी ना आया धर्म के इस उपवन मे ।।टेर।।

ऊचा कुल है ऊचा घर है खानदानी ऊचा स्तर है।
सिद्धो जैसा होकर भी तू भूला जिनवाणी का स्वर है।
पैसा परमेश्वर है तेरा फूला है तू इस घन मे।।1।।

छोटे से इस मुख मे तू ने डाला जाम का गदा पानी।
बेहोशी की हालत मे ही खो दी तू ने ये जिन्दगानी।
प्रभु के नाम का प्याला पीये तो आनद हो कण-कण मे।।2।।

माणिक फकीर, तुलसी, बाबा इन गुटको के तुम हो पुजारी।
बीडी तम्बाकू सिगरेट मे तू ने, अपनी ये जिन्दगानी हारी।
कैसा पतझड आया है ये तेरे नन्दन वन मे।।3।।

वैश्या परनारी जुआ मे तेरा मन कितना है डोला।
अपने हाथो से ही तूने दुर्गति का दरवाजा खोला।
राम गुरु की शिक्षा आये "पुण्य" तेरे जीवन मे।।4।।

तर्ज - मेरी छोटी सी ये नाव..

मेरे बाहुबली भ्रात, सुनो बहनो की बात।
बीते दिन और रात, क्यों ना हुआ केवल ज्ञान रे।
जब तक है ये मान, नही होगा परम ज्ञान।
करलो कितना ही ध्यान, छोडो तुम्हारा अभिमान रे।।टेर।।

राज पाट से मुखड़ा मोडा, राग रंग को तूने छोडा।
तजे मोह के विचार सारे विषय - विकार।
धन और परिवार। अब क्यों गमावो जीवन जान के।।1।।

मेरु गिरी की भांति खड़े हो, झूठे हट मे इतने अडे हो।
सोचो - सोचो बारम्बार, करना है उद्धार।
होना भव से पार। कर लो ये आत्म उत्थान रे।।2।।

अभिमान को दूर भगावो, जन्म - मरण का दु:ख मिटाओ
मंजिल सामने खड़ी करो देर ना घड़ी।
जोड़ो सिद्धों से लड़ी। लेवो हमारी बात मान रे।।3।।

बहनों के वचन ये सुने है भावो से प्रणत हुए है।
पाया निर्मल ज्ञान, भरा "पुण्य" निधान।
बने सबसे महान। जय - जय गूंजे जहान रे3 ।।4।।

तर्ज - तुझे चांद के बहाने..

तपरग लगा ये सुहाना कि मगलगान करे ओ तपस्वी।
जिनधर्म का मान बढाया कि अक्षय गान करे ओ तपस्वी।।टेर।।

धन्य - धन्य तपस्वी तुमको2 कि नाम अमर ये करे।।1।।

राम शासन को चमकाया, कि श्रद्धा भाव धरे।।2।।

तप की ये ज्योति जलाई कि, कर्मो को दूर करे।।3।।

तप शिखर पे कदम बढाये कि भवसिधु से तरे।।4।।

ब्यावर सघ का नाम दिपाया कि "पुण्य" सुख साता वरे।।5।।

तर्ज - जहां डाल पर..

हे परम तपस्विनी तेरे तप का हम अभिनदन करते।
तप का अनुमोदन करते।।टेर।।

खाने - पीने में ध्यान हमारा रहता है हर पल[2]।
कैसे इतना कठिन तप कर पाया अनुपम संबल[2]।
तप ज्वाला मे तपकर अपनी काया कुंदन करते।।1।।

सूरज जब तपता है तो सागर भी बनता बादल।
सोना जब तपता है तो बन जाता है वो निर्मल।
तप की महिमा बड़ी अनुठी कण - कण पावन करते।।2।।

इस हुक्म सघ के शासन की "पुण्य" है गरिमा बढाई।
नाना गुरु के आशीष से गुरु राम की कृपा पायी।
अक्षय - तप के शिखर पर चढकर जीवन पावन करते।।3।

तर्ज - चलो रे डोली...

करो रे भक्ति तपस्वी की आज।
मगल वेला आज आई।
गहुली गाओ, करो सत्कार।
मगल वेला, आज आई।।टेर।।

भवो -भवो के कर्म कटे, विषय कषाय के भाव हटे।
आत्म ज्ञान मे लीन बने, सयम से जीवन रगीन बने।
करते है सब मिल जय - जयकार।।1।।

चचल मन को वश मे करे, सारी विपदाए दूर टरे।
जीवन मे पाता सुख और चैन, मान ले गर जिनवाणी की केन।
अनुमोदना हो तपस्वी की आज।।2।।

राम गुरु की हुई महर कृपा की कर दी ऐसी नजर।
मासखमण श्री काता जी करे, "पुण्य" खजाना अपना भरे।
धन्य तपस्वी को बारम्बार।।3।।

तर्ज - आज मेरे यार कि...

मुझे सिद्धि को पाना है मुझे मुक्ति मे जाना है।
हट जाओ सब कर्म मुझे जीवन सजाना है ।।टेर।।

नही बचपन जवानी, भोग तृष्णा गुलामी।
जन्म - जरा ना मृत्यु आना जाना नही यूं।
होऽऽ . दुःख नहीं है रच वहां खुशियो का गाना है।।1।।

नही विषयो की ज्वाला कषायों पर है ताला।
राग और द्वेष छूटे, मोह ममता भी रुठे।
होऽऽ.. स्वर्गो का वह स्वर्ग बड़े सुख का ठिकाना है।।2।।

नहीं गुरु, न चेले, भीड़ मे भी अकेले।
ये छोटा, ये बड़ा है, नही झगड़ा वहां है।
होऽऽ.. रोग - शोक चिंता का नही वहा नाम निशाना है।।3।।

. - परमात्मा बन, कर्म मुक्तात्मा बन।
मोक्ष नगरी में जाऊँ, लोक शिखर को पाऊं।
होऽऽ राम गुरु ये "पुण्य" कृपा हम पर बरसाना है।।4।।

तर्ज - मां शारदे कहाँ तू..

ओ वीतराग भगवन, तेरा ही ध्यान ध्याऊ।
इन पुद्‌गुलो से हटकर, मै चित्त समाधी पाऊ।।टेर।।

अनुकूलता मे खोया, प्रतिकूलता मे रोया।
जन्मो जन्म से मै ने कर्मो का बीज बोया।
पर भाव से हटू मै, स्वभाव मे ही आऊ।।1।।

पुद्‌गुल ही खाया - पीया, पुद्‌गुलो मे ही जीया।
इनका ममत्व छोड़ू, जलता रहे आत्म दीया।
योगो का कर निरोधक अनाहरकता को पाऊ।।2।।

"खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु"।
तेरी दशा को पाऊ, सिद्धा-सिद्धि मम दिसन्तु।
गुरु राम की कृपा से "पुण्य" सुखो को पाऊ।।3।।

तर्ज - प्यार हमारा अमर रहेगा...

वीर प्रभु के साधक है हम, साधना हम भी सीखे।
शूलों मे भी फूल के जैसा, खिलना हम भी सीखें।।टेर।।

सोना अग्नि में शुद्ध होता, मेहदी घिसकर ही रंग देता।
ताप से ही तो दीप है जलता, घिसकर चंदन खुशबू देता।
सूरज और चांद के जैसा चलना हम भी सीखे।।1।।

तरुवर चोटे खा - खा कर के, सबको देता मीठा फल है।
कोई भेद का भाव न रखता बादल देता मीठा जल है।
फूल कांटो में सम है धरती सहना हम भी सीखे।।2।।

चीटी से श्रम करना सीखे कोयलिया से मीठी बोली।
कछुए से गोपन की विधा, अवगुण की हो जाये होली।
एक - एक वस्तु मे गुण है चुनना हम भी सीखे।।3।।

सिर पर अंगारे धधक रहे थे, गज सुकुमाल ने कितना सहाथा।
तन की उतारी चमड़ी चाहे खदक ऋषिने कुछ ना कहा था।
कत्ता विकत्ता "पुण्य", ये देशना हम भी सीखे।।4।।

तर्ज - मिल के नाचे गाये हम...

तप की शक्ति निराली है सब धर्मों ने बताई है।
तप की महिमा भारी है देवो ने भी गाई है।।टेर।।

शूरवीर है सेवन्त मुनि सा कठिन साधना करते।
तन के स्वर्ण पात्र को ये तो तप की खीर से भरते।
आई तप की पुरवाई।।1।।

करता है जो भाव तपस्या मिटती सारी समस्या।
मोह कर्म को तोड गिराये, मुक्ति महल को पास्या।
रमते देव यहा आई।।2।।

तप से टूटे भव-भव बधन आतम बनती कुन्दन।
तप से पाप कर्म कट जाये, "पुण्य" का आये सावन।
खिल रही केशर क्यारी है।।3।।

जीवन तर्ज - मैं तो छोड़ चली सारा संसार...

कोई माया का हो ना व्यवहार, जीवन सरल बने।
यहां जीना है तुझको दिन चार।।टेर।।

टेढी - मेढी क्यों चाल चले है।
उल्टी सीधी क्यो बात करे है।
तेरा मलिनता भरा है विचार।।1।।

"सो ही उज्जुय" आगम की वाणी।
धर्म टिकता जो सरल हो प्राणी।
सद्गति का मिलता उपहार।।2।।

मन मलिन-तन सुन्दर ऐसे
विष रस भरा कनकघट जैसे।
बक वृति के छोड़ो सस्कार ।।3।।

झुठ दिखावा भार बढाये।
दुर्गति की ये राह ले जाये।
पुण्य ॠजु है मुक्ति का द्वार ।।3।।

तर्ज - बाबुल की दुआएँ...

खुद के ही कर्म उदय आते, खुद को ही भोगना पडता है।
निमित्त को कोई दोष न दो, सब अपना किया ही मिलता है।।टेर।।

पूर्व भव मे जो बाधा है, वो ही तो आज उदय आता।
वहॉ बीज बोया तू ने जैसा, उसका ही फल यहॉ पाता।
जैसा भी है स्वीकार करो, फरियाद कोई क्यो करता है ।।1।।

जो मिलना है वो ही मिलता, जो बनना है वो ही बनता।
तू लाख उपाय करे चाहे, होता है जो सिद्ध को दीखता।
समझदारी इसमे ही है जो, सत्य के मार्ग पर चलता है।।2।।

गुरु राम मिले है इस भव मे, तू धर्म के पथ पर ही बढना।
जिनाज्ञा का पालन करके साहस के बल बढते रहना।
जो उदयभाव को सहता है 'पुण्य' वो मुक्ति वरता है।।3।।

तर्ज - सौ बार जनम लेगें...

जिनवाणी का दीप जले जीवन ज्योति भर ले।
विश्वास अगर दृढहै भव सागर से तर ले।। टेर ।।

मंजिल पे मजिल है, बुनियाद नही उसका।
इक वृक्ष विशाल खड़ा, पर मूल नही उसका।।
वही साधना सफल बने, श्रद्धा गर तू कर ले।।

चाहे जप तप खूब किया, ऊपर से शील सजा।
संयम का स्वांग किया, क्रिया का ढ़ोंग रचा।।
ज्ञान क्रियाभ्य: मोक्ष: विश्वास अटल कर ले।।

जिनधर्म सच्च सच्चं, कोई शंका नही आये।
शक्कर बिन हलवे मे, मिठास नही आये।।
"जाए सद्धाए" से "पुण्य" मुक्ति वर ले।।

तर्ज - ए मेरे वतन के....

यह पचम काल है आया, यहा कोई सुखी नही है।
सब खुद ही खुद को भूले यहा कौन जो दु:खी नहीं है।। टेर ।।

कही पर शाति नही है, चहु आपाधापी लगी है।
जहा[2] भी नजरे पसारे, वहा अहम का काटागड़ा है।।
पापो को करते करते, जिन्दगानी थकी नही है।।

विश्वास न भाई - भाई पर, सब झुठे भरम मे जीते।
स्वार्थ मे हो मतवाले, यहां मोह की हाला पीते।।
हरियाला बाग ये उजडा, जहा आधियॉ रुकी नही।।

नरभव उत्तम कुल पाया, जो सोने मे है सुहागा।
कुडे मे रतन को पाकर, क्यों रहता है तू अभागा।।
गुरु राम मिले है फिर भी, पुण्यवानी फली नही है।।

तर्ज - तू दिल की धडकन....

जीवन के दर्पण में खुद ही खुद को देखो ना।
खुद के ही दोषो को, खुद मे ही खोजो ना।।टेर।।

देखने की आदत तो है पर, दूजो को ही देखा है।
स्वयं-स्वंय को देखेगे तो, स्व का ज्ञान भी होता है।।
पर की आदत छोड जरा, खुद ही खुद को देखो ना ।।

पर निंदा का रस मीठा, घुट-घुट कर पीता है।
छोटा सा अपराध हो चाहे, पर्वत जैसा दिखता है।।
ज्ञान की चलनी लेकर के, तुम अपने को परखना।।

गुण तो बस मुझ में ही है, और दोष दूसरो मे ही है।
कहने में और सुनने मे ये, लगते कितने मस्त ही है।।
कर्म सजा इसकी कितनी 'पुण्य' थोड़ा सा सोचो ना।।

तर्ज - हम तुम चोरी से...

दिन ये बीत रहे, राते बीत रही, जल के प्रवाह समान।
क्यो नहीं करता धर्म ध्यान।।टेर।।

जनम जनम से सोया अनमोल वक्त ये खोया
नरभव पाया है फिर भी पुण्य का बीज न बोया
सतो की वाणी[2] से नही करता है तू ज्ञान।।

सुसस्कारे को भर के सुवास को फैलाये।
विनय विवेक का दीपक, जीवन मे प्रगटाये।।
सिद्धो सी आतम में[2] क्यो छाया है अज्ञान।।

पुद्‌गलानदी बन के मौजे तू खूब उडाई।
माया ममता मे 'पुण्य' ये जिन्दगानी लुटाई।।
छोटे से जीवन में[2] क्यो करता है गुमान।।

तर्ज - बहारों फूल बरसाओ....

विचारों जरा थम जाओ, मुझे मेरी साधना करनी है।
यहां क्यों इतना सताओ, मुझे मेरी साधना करनी है।। टेर ।।

चाहे दिन हो चाहे राते, खुशिया हो चाहे गम है।
कभी सुख है, कभी दुःख है भाव चलते हरदम है।
मन को थोड़ा समझाओ, मुझे . .

जब ध्यान में बैठू या हाथ मे हो जपमाला।
प्रभु भक्ति करु तेरी तो विचार रचे हरमाला।
अब तुम स्थिर बन जाओ मुझे.. ..

यह छोटा सा मन है मेंरा, जिसमे विचार हजारो।
इतना क्यों उछलती हो मन सागर की लहरो।
"पुण्य" ये तरंगे हटाओ, मुझे....

तर्ज - कांची रे कांची रे....

कोशा - आये है आये है नाथ मेरे आये स्वागत करु दिल खोल के।

स्थूलीभद्र - सोचो रे सोचो रे, कोशा अब सोचो, झूठा ये सारा ससार रे हो2

कोशा - जन्म - जन्म के मीत मेरे, कैसे तजे हो प्रीत मेरे।

नाथ मेरे तुम प्राण मेरे तुम। कैसे चले मुख मोड के।

स्थूलीभद्र - अज्ञान मे था मेरा जीवन । पाई नही थी गुरुवर शरण।

भोगो मे खोया, नींद मे सोया, बीता समय बेकार रे।

कोशा - कोमल सी है ये तेरी काया। कैसे तुम्हे ये जप - तप भाया।

कितना यहा सुख है, लिया क्यो दु ख है आ जाओ सारे छोडके।

स्थूलीभद्र - चारो गति मे दु ख मै ने सहा । नरक का कष्ट नही जाये कहा।

पुण्य कमाया, नर - भव पाया, सयम ही इसका सार रे।

कोशा - याद करो वो बीती घडिया । कितनी की है वो रग रलिया।

साथ निभाना यू ना रुलाना, तडफे है रु रु करोड रे।

स्थूलीभद्र - कोशा हटाओ मोह जाला। तोडो तुम्हारे कर्मो का ताला।

जप -तप स्वीकारो, सयम धारो, मिलेगी समता अपार रे।

कोशा - कितना कठिन है सयम पालन। खाडे की धार पर है ये गमन।

धारा क्यो योग है, मेरे ये भोग है, देव भी करते होड रे।

स्थूलीभद्र - क्षण भगुर है सुख सारे । इसमे क्यो अपना जीवन हारे।

पापो का भारा बढता अपारा, जनम जनम दु ख कार रे।

कोशा - साची कही ये बात सारी । अब तक जीवन ये मै तो हारी।

चौमासा ठाओ, धर्म बताओ, कर्मो को दुगी तोडरे।

स्थूलीभद्र - कोशा ने बारह व्रत धारे, भव सागर से हुई किनारे

रगी धर्म मे, "पुण्य" कर्म मे, स्थूलीभद्र के लार रे।

तर्ज - ए मेरे दिले नादान...

जयं चरे जयं चिट्ठे, जय मा से जय सए।
पल भर प्रमाद न हो, ऐसा पौरुष जगे।।टेर।।

नरभव का ये अवसर मुश्किल से आया है।
सदभाव फले अपने, जिन शासन पाया है।।
दु:खो के रोग मिटे, कर्मो की पीड़ भगे।।1।।

झूठे संयोगो मे नही तुझको फंसना है।
विषयो की अग्नि से बचते ही रहना है।
ससार के मेले मे नही कोई तेरे सगे।।2।।

गुरु ज्ञान का घण्टा बजे, अब नीद उड़ा ले तू।
जिनवाणी दीप जले, अंधकार भगा ले तू।।
समकित के तरुवर पर सयम के फूल लगे।।3।।

हे आतम: शौर्य जगा शाश्वत सुख को वर ले।
मुक्ति मिल जायेगी, विश्वास अटल कर ले।।
गुरु राम का ले सबल, "पुण्य" के रंग मे रगे।।4।।

तर्ज - बुरा ना कहो ...

जैनो तुम सुनो, जैनो तुम जागो, जैनो कुछ सोचो।
कहा जा रहा धर्म हमारा, अपनी आखे खोलो ।।टेर।।

सबके मन मे सुन्दर सपना राम राज्य का ख्वाब।
किन्तु जैनो के घर मे ही पीते चिलम शराब।
शरम नही आती है उनको, लज्जित धर्म अमोलो।।1।।

जीओ और जीने दो के ये नारे खूब लगाते ।
दहेज के नाम पे बहू जलाते, भ्रूण हत्या करवाते ।
कहा गयी है दया तुम्हारी अपने मन को तोलो ।।2।।

जिस भारत के गाव मे दूध की नदियॉ बहती ।
यही कत्लखाने मे देखो कितनी गाये कटती ।
क्यो खामोश बने हो फिर भी कुछ तो मुह से बोलो ।।3।।

महावीर के बन सिपाही आगे कदम बढांओ ।
बद करो ये खून की नदियॉ, देश को स्वर्ग बनाओ ।
क्यो तुम कायर बन बैठे हो "पुण्य" की ऑखे खोलो ।।4।।

विदाई

तर्ज - बाबुल की दुआएं ....

दु:ख दर्द भरी आहे कहतीं ना जाओ[2] यही रहना।
अखियो से झर-झर नीर बहे करुणा सागर करुणा करना।।टेर।।

वर्षा की रिमझिम घडियो मे, हर अतर मन खुशहाल रहा।
मासखमण की उत्तम कडियो मे, तप का अनुपम माहौल रहा।
जिनवाणी सुनकर मुग्ध हुए बहता था प्रेम सुधा झरना।।1।।

पल दो पल बीता लगता है, चातुर्मास ये बीत गया।
कि आख मिचौनी सी हम से, सुन्दर क्षण स्वप्न समान गया।
हर दिल की एक पुकार यही ना जाओ[2] यही रहना।।2।।

नही सेवा कर पाये तेरी, नही भक्ति दीप जला पाये।
सब माफ करो अविनय मेरा, तेरी गौरव गाथा गाये।
विनती ये मेरी सुन लेना ना जाओ[2]. यही रहना।।3।।

तर्ज - पल[2] तेरी याद सताये ओ पिया...

सबका मन मुरझा देती है ये विदा।
रोको रे कोई रोको महासतियां जी लेती ये विदा।।टेर।।

सोचा नही था तुम भी हमसे इतना प्रेम बढ़ाओगे।
जीवन की इस मोड़ पे लाकर निराधार यो छोड़ोगे।
झर - झर आंसू बहा रही है ये विदा।।1।।

चार माह तक लगा था सावन, अब क्यो पतझड़ आया है।
मन की वीणा टूट रही है, गम के बादल छाया है।
ठहरी सांसे देखकर के ये विदा।।2।।

तेरे इन उपकारों को हम भूल कभी ना पायेगे।
"पुण्य" राह दिखाई तुमने, याद सदा हमे आऐगे।
सह न सकेगे तेरी कोई ये विदा।।3।।

तर्ज - न कजरे की....

श्रद्धा का ले उपहार, भक्ति के तिलक को धार।
भाव अक्षत कर स्वीकार, हम तो करते है विहार।
हर मन मे धर्म अपार, सेवा ही था श्रृगार।
हर दिन रहा मगलाचार । हम तो करते है विहार।।टेर।।

तप - त्याग से बीते जीवन, सब प्रेम भाव से रहना।
खुशहाल रहे हर जन-मन, समता का बहता झरना।
शुभ चिन्तन रहे हरदम, प्रभु शरणा हो सुखकार।।1।।

श्रद्धा के झर - झर आसू बतलाती भक्ति मन की।
हर अन्तर दिल की पीडा, जतलाती प्रेम लगन की।
यही भक्ति यही निष्ठा रहे गुरु चरणे अपार।।2।।

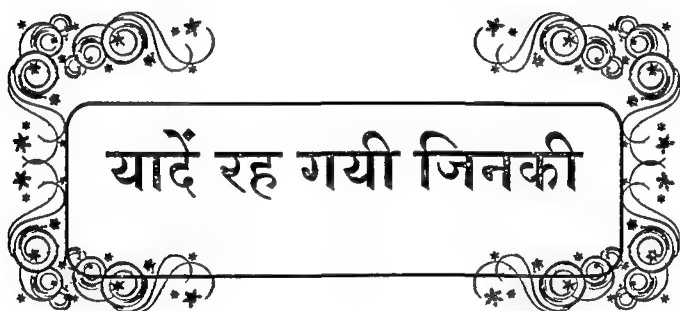
बुझते दीपक की लौ मे नवप्राण दिये है सुखकर।
महासती का नव जीवन ही, सेवा का है फल सुन्दर।
रहे यादे दुर्ग सघ की नही भूलेगे उपकार।।3।।

तर्ज - कौन दिशा से चला....

अपनो से अपनो की कैसी ये विदाई।
रहना इन चरणो मे सदा तेरे शरणो में फिर कैसी जुदाई ।। टेर ।।

गर तुम हमको दुर करोगे रुठ जायेगी सांसे।
देखकर इन आखो के आंसू रो देगी ये राते।
करूणा सिंधु ओ गुरुवर तुम करुणा तो लाओ किरतार।
होऽऽ कांपते हृदय को कैसे हम थमाये[2]
कर दो महर - नजर, रखलो अपने चरण, हा कह दो नाऽऽऽ ।।1।।

बादल एक ना उमडा गगन मे नैना भर-भर आये।
दिल का गम ये कह न सकेंगे, दरिया मे ना समाये
इन चरणो से दूर न जाये, "पुण्य" विनती लो स्वीकार
होऽऽ हरियाले जीवन मे पतझड़ ना आये[2]
देना शुभ आशीष, चाहूं मुक्ति का ईश, कृपा कर देनाऽऽऽ ।।2।।



यादें रह गयी जिनकी

तर्ज - मेरे मितवा मेरे मीत रे....

मेरे गुरुवर, मेरे नाना रे। क्यों छोडा हमे मझधार रे।।टेर।।

लाखो ये आंखे आंसू बहाई[2]।
फिर भी क्यो तुमने ली हमसे जुदाई।
आजाओ अब ना तड़फाओ, सुन लो करुण पुकार रे।।1।।

तेरी आज्ञा पर प्राण धरगे
तेरे पद चिन्हों पर चलेगे।
खाये कसम ये अतिम दम ये, पालेगे तेरा आचार रे।।2।।

मंगल नाम तेरा सबको है प्यारा।
जन - जन के होठो का एक ही नारा[2]।
जीना सीखा दो, "पुण्य" सुना दो, समता की झणकार रे।।3।।

तर्ज - भक्तारा प्यारा भगवान....

नाना - नाना नाम हर जुबान कि अब म्हाने दर्शन दो।
पल - पल धरा थांरो ध्यान, कि अब म्हाने दर्शन दो।।टेर।।

सगला रो दिल है भारी - भारी।
छोड़ चाल्या थे क्यो परबारी।
पुरो करो म्हारो अरमान कि।।1।।

दिन पर दिन ए बित्या जावे।
पर मनड़ो नही था ने भुलावे।
प्राणा मे बस्या हो बन प्राण।।2।।

लाखो आंख्या है उपवासी।
कान बण्या है ज्यो सन्यासी।
दया तो लाओ नी दयावान।।3।।

चादर महोत्सव आज मनावा।
पर अचरज थाने पास न पावा।
"पुण्य" दिखाओ भगवान।।4।।

तर्ज - एक तू ना मिला....

आज गुरु यहा होते तो कितना समा प्यारा लगता।
नाना गुरु यहां होते तो कितना समा प्यारा लगता।।टेर।।

घोर उदासी छायी है।
मन की कलियां मुरझायी है।
देखो भक्त है रोतें[2] सूना-सूना यहां सारा लगता।।1।।

किस दुनिया में जाकर बसे है।
तेरे दर्शन को सब तरसे है।
क्यों रुठे हो ऐसें[2] तेरे बिन ये जहा खारा लगता।।2।।

कार्तिक बदी तीज आयी है क्यो।
रंग मे भंग ये लायी है क्यो।
ये विरह क्यो हुआ "पुण्य" आते कोई चारा लगता।।3।।

तर्ज - आने से उसके आये....

याद करे ये सारा जहां आ जाओ गुरुवर अब तो यहा।
सारी जिदगानी है, तेरे नाम गुरु,
मेरी जिन्दगानी है मेरे नाना गुरु।।टेर।।

जनम - जनम के साथी, कैसे तुमने बिछोह किया है।
वीर गौतम सा गुरुवर हमने तुमसे ये मोह किया है।
निर्मोही बनकर के चले कहा ज्ञानी है।।1।।

हम तो दीप बुझे थे, तुमने ही तो ज्योति जगाई।
मेरी इन आखो ने तुम से ही तो आस है पाई।
कैसे हम भूलेगे प्रीत पुरानी।।2।।

मेरी मन वीणा पर सयम की है साज सजाई।
भटक रहे थे हम तो, तुमने ही तो राह बताई।
हमने सदा पायी है "पुण्य" मेहरबानी है।।3।।

तर्ज - झिल मिल...

मन में बसा है नाम तुम्हारा।
तरसे है तुम बिन प्राण हमारा।
आ जाओ इक बार गुरुवर दर्शन दो हितकारा।।टेर।।

श्रृंगार मां के लाल प्यारे, धरती के उजियारे है।
कण - कण मे बिखरे है देखो, गुण रत्नो के तारे है।
तुमने दिखाया शिवधाम प्यारा।।1।।

दाँता गांव की पुण्यधरा पर तुमने आ अवतार लिया।
राजहंस उतरा आंगन मे, मंगल घर-घर द्वार किया।
शासन गगन मे चमका ध्रुवतारा।।2।।

मन है सूना - सूना सबका घोर उदासी छायी है।
फिर से आकर के सुना दो समता की शहनाई है।
"पुण्य" चरणों मे कर दो उद्धारा।।3।।

तर्ज - तेरी गलियों में ना...

तेरे दर्शन को हम चाहते प्रवर ओ मेरे नाथ।
आओगे कब हमे दे दो खबर ।।टेर।।

नाना गुरु हमको तेरा नाम प्यारा है।
तेरे लिए हमने किया सब तन - मन वारा है।
फिर भी क्यो छोड गये देवपुर नगर।।1।।

कह रही धरा और गा रहा गगन।
तुम्हे बुलाने को आतुर है धरती का कण - कण।
हम पर भी कर दो प्रभु करुणा नजर।।2।।

तू ही मेरा स्वामी, तू ही मेरी मजिल।
आना अगर चाहो तो नहीं कोई है मुश्किल।
तेरे ही हाथो मे है सत्ता अमर।।3।।

तेरी आज्ञा पर हम प्राण लुटा देगे।
तुम जहा बोलो वही पलके बिछा देगे।
"पुण्य" कृपा का हम चाहते है वर।।4।।

तर्ज - ए मेरे प्यारे...

ए मेरे गुलाब सतीवर, नाम तेरा हो अमर, वदे बारम्बार।
बिलखते हमें छोड़कर
सबके दिल को तोड़कर कहा चले किरतार।।टेर।।

आप जब आए धरा पर, खुशियों का सचार था।
कस्तूर बाई के द्वार पर, आनद अपरम्पार था।
गुलाब बन महके सदा, त्याग मे रहके सदा।।1।।

संयम ले घर छोड़ दिया, तपस्या मे मन को जोड दिया।
वाणी में ऐसा जादू भरा, भव्यो के मन को मोड़ दिया।
क्या तेरा व्याख्यान था, सगीतमय वो गान था।।2।।

समता, क्षमा और त्याग की मनोरम यादे रह गयी।
गुणों की है गाथा महा, जो इस जुबा पर रह गयी।
तेरी आज्ञा मानेगे, प्रण सभी निभाएगे।।3।।

नाना राम की इस बगिया की हम सब सलोनी मणिया है।
गुलाब के इस फूल की हम सब सुनहरी कलियां है।
खिलते रहे हरदम सभी ऐसा दो आशीष अभी।।4।।

ओ दयालु कहा चले हो, देखो मन उदास है।
"पुण्य" दर्शन दो हमे इस दिल की ये अरदास है।
दु:ख पारावार है आखे अश्रुधार है।।5।।

तर्ज - सौ बार जनम...

क्यो लाई ये उत्पात, कार्तिक बदी तीज की रात।
नाना गुरु छोड गये, सपने सी हो गयी बात।।टेर।।

तुम हम, हम तुम जैसा ये चिर परिचय था।
फिर भी क्यो तोड़ गये, ये प्रेम अनन्य था।
आकर के फिर दे दो, हमको अब अपना साथ।।1।।

तुम दूर भले तन से, पर पास सदा मन से।
हमने तुमको बाधा, गुरुवर अपने पन से।
पल - पल हम याद करे, तेरे लाखो अनुदान।।2।।

तेरे एक इशारे पे, हम कदम बढाएगे।
जो बोलोगे हमको हम कर दिखलायेगे।
दर्शन देकर कर दो करुणा की ये बरसात।।3।।

तेरी एक छवि दिखती, गुरुराम के रुप मे वो।
क्या सचमुच तुम ही हो, इस दिव्य स्वरुप मे वो।
"पुण्य" धन्य बने है हम, पाकर के ऐसा नाथ।।4।।

तर्ज - जब कोई प्यार से...

नाना गुरु की याद हमको आती है।
श्रद्धा से ये आंखे डबडबाती है।
मन की वीणा गीत तेरे गाती है।
तू ही तो मेरे जीवन की बाती है।।टेर।।

दिल पटल पर तेरा ही ये नाम है।
वीर हनु के ज्यो बसे थे राम है।
जन्मो से तेरे ही हम नाती है।
मोक्ष तक तू ही तो मेरा साथी है।।1।।

हम दीपो ने तुमसे ज्योति पायी है।
मुरझे इस चमन मे जान आयी है।
मेरी जिन्दगी का तू ही पाती है।
तार दे भव - सिन्धु गोता खाती है।।2।।

आज तेरा जन्म दिन मना रहे।
तुमको नही पाके अकुला रहे।
तेरी वाणी जिन्दगी सजाती है।
"पुण्य" तुमसे पाएगे समाधि है।।3।।

तर्ज - तुम दिल की धड़कन...

नाना गुरु के सुमिरन को करना है[2]।
उनकी आज्ञा मे हमको रहना है[2]।
क्यो हमको तुम छोड गये, क्यो हम से मुख मोड गये।।टेर।।

क्यो रुठे हो तुम हमसे, सब बताना ही होगा।
कौन उपाय करे गुरुवर, अब तुमको आना ही होगा।
आखे अश्रुधार बहे, कहो कितना है दर्द सहे।।1।।

हुक्म सघ की बगियां मे, कितने ही फूल खिलाये थे।
अपने ही हाथो से निश दिन, पौधो को नीर पिलाये थे।
कितना ये उपकार किया, गण उपवन गुलजार किया।।2।।

आओ हम सब मिलकर के, इस बगिया को सरसब्ज करे।
माली राम गुरु इसके, किसकी ताकत उजाड करे।
चाहे आधी हो तूफान "पुण्य" देगे आखिरी प्राण।।3।।

तर्ज - मटकी...

होऽऽऽ नानेश नाम सुहावणो।
आर्य देव । थांरे चरणां मे शीश है झुकावणो।।टेर।।

थांरा अनगिन उपकारां ने किया मैं बतलावा।
जन्म और जीवन पाया हां भूल किया मै जावां।।
साचो मारग बतलायो है, भवसागर तिरावणो।।1।।

मोड़ - मोड़ पर थांसू गुरुवर, नव संजीवन पाया।
प्राण - प्राण मे शक्ति भरक, जीणो है सिखलाया।।
स्नेह दान पायो है थांसू, जीवन दीप जलावणो।।2।।

समता रो सिन्दूर लगाकर जन - मन ने जगाया।
छिपी हुई है क्षमता सबमें साचो ज्ञान कराया।
करो समीक्षा अपणी - अपणी मोक्ष नगर में जावणो।।3।।

पल - पल छिन - छिन याद सतावे दर्शन दो सिरताज जी।
सांस - सांस में रोम - रोम मे, थे बसया पुण्यराज जी।
था रे पदचिन्हा पर म्हाने जीवन भर है चालणो।।4।।

तर्ज - करती हूं तुम्हारा व्रत में...

किस रुप मे अब तुमको हम याद करेगे।
उपकारी महासतीवर तुम्हे क्या भूल सकेगे! ओ चन्द्र सतीवर।।टेर।।

मिलता था मा का प्यार वो अब कहा मिलेगा।
जिस साये मे सुख पाये थे आधार कहा मिलेगा।
ममतामयी आचल तेरा अब कहा पायेगे।।1।।

देता था शुभआशीष वो अब हाथ कहा है।
मिलती थी करुणा जिससे, वो अब नैन कहा है।
वो मीठी - मीठी शिक्षा, कहो कहां पायेगे।।2।।

यह परिवार बनाया क्यो, जब छोड जाना था।
इतना प्यार बढाया क्यो, जब तोड जाना था।
थाम के बाहे हमको अब कौन चलायेगे।।3।।

बोलो जहा भी हो सतिवर विश्वास दो हमको।
मिलती रहेगी हरदम ममता की छाया हमको।
"पुण्य" है साथ तुम्हारा सदा याद रखेगे।।4।।

तर्ज - प्यार हमारा अमर रहेगा....

संयम का हर पल था सुहाना, हो के सजग तुम रहे।
कीचड़ मे ज्यो कमल है खिलता ऐसे ही तुम रहे।।टेर।।

यह जग तो है दु:ख का सागर, पल भर मे ही मुखड़ा मोडा।
कौन है अपना कौन पराया, हर रिश्तो को क्षण मे छोडा।
गजब तुम्हारी साधना देखी लाखो परीषह सहे।।1।।

ऐसा शौर्य दिखाया तुमने, वृद्ध थी काया मन था जवां।
अप्रमत्त रह करके हरदम, काटे कर्म अनन्त भवा।
क्षण - क्षण की कीमत है जानी, सयम सुख में रहे।।2।।

नाना गुरु की देशना सुनकर, दौड़ पड़े कंटीले पथ पर।
श्रद्धा और समर्पण से तुम धन्य बने गुरु राम को पाकर।
"सम्पत" नाम को अमर किया है "पुण्य" गुणो मे रहे।।3।।

तर्ज - मेरा दिल खो गया है...

हो नाना रे. . हमे क्यो छोड गये तुम,
ये मुखडा मोड गये तुम, करके यू बेसहारा
ये नाता छोड़ गये तुम।।टेर।।

समझ न आया सावन मे ये कैसा पतझड़ आया।
खुशियो के इस आगन मे ये कैसा मातम छाया।
चारो और ये खामोशी है दर्द ये क्या बतलाये।
तुम से बिछुड के हर भक्तो का दिल देखो कुम्हलाये।
वो तेरा, वो मुस्काना, वो तेरा वो अपनाना।
सयम शिक्षा को लेकर वो तेरावो अफसाना।
बहुत याद आ रहे हो[2] ।।1।।

यू कैसे तुम छोड़ चले हो, ये परिवार बसा के।
कैसे मोह को तोड चले हो इतना प्यार बढ़ा के।
सारे आसू सूख गये है, अब तो दर्श दिखादो।
प्यासी आखे, प्यासा मन ये अब तो प्यास बुझादो
तेरा कहना करेगे, तेरे पथ पर चलेगे।
तेरी शिक्षा हमेशा सदा हम ध्यान धरेगे।।2।।

महकी हवाए उड़ती फिजाये, ये अहसास दिलाये।
सग - सग रहते हो हमारे ये आभास कराये।
राम गुरु की मूरत मे ही छुपी है तेरी सूरत।
तेरी "पुण्य" कृपा से देखो बरसा है ये बसत । माने आभार तेरा।
करो उद्धार मेरा, है ये उपकार तेरा, तू ही आधार मेरा।
बहुत याद आ रहे हो[2] ।।3।।

तर्ज - धरती धोरा री....

जिनका करते आज है सुमिरन,
जप - तप संयम ही था जीवन।
श्रद्धानत हो करते वंदन गणेश गुरु प्यारे।।टेर।।

जिनके सांस - सांस मे संयम, जिनके प्राण - प्राण में सयम।
जिनके मन - वच - काय मे सयम।।1।।

तन में हो गई कितनी व्याधि, पर वे छोड़े नही समाधि।
अरिहन्त नाम ही जिनका साथी।।2।।

ढूॅढ़ा एक रत्न अनमोला, नाना गुरु को ऐसा तोला।
जन - जन जय..जय कार है बोला।।3।।

पाट परम्परा से ये चमका, हुक्म गणि नाना भी दमका
राम गुरु का शासन महका।।4।।

सघ रथ के सारथी प्यारे, राम गुरु ये अर्ज स्वीकारे।
"पुण्य" ले जाओ मुक्ति द्वारे।।5।।





अर्थ सहयोगी पारिवारिक परिचय

परम गुरु भक्त
श्रीमान स्व.श्री मांगीलालजी सेठिया
एवं
श्रीमती स्व श्री झमकू देवी सेठिया

मेवाड की पावनधरा, अनेक रत्न महाराणा प्रताप, भामाशाह, आचार्य श्री गणेशीलालजी म. सा. एवं आचार्य श्री नानालालजी म. सा. की जन्मदात्री पुण्य मेवाड धरा। जिसके छोटे से गाव गंगापुर जिला भीलवाड़ा में आज से करीब १०० वर्ष पूर्व सेठसा. श्री छोगालालजी जी सा सेठिया एवं श्रीमती चुन्नीबाई की कुक्षी से जन्मे श्री मांगीलालजी जी सा सेठिया।

आपका विवाह आमेट निवासी सेठ सा श्री घासीलालजी सा लोढा की सुपुत्री झमकूकवरजी के साथ हुआ। १४ वर्ष की अल्पवय मे मात्र ३ कक्षा की पढाई के साथ आप व्यवमाय मे सलग्न हुए। इस छोटे व्यवसाय के साथ नीति एव धर्मपरायणता से वच्चो का सुसस्कारो से पालन पोषण किया। आपने अनेक वर्षो तक पर्यूपण पर्व की आराधना आचार्य स्व श्री नानेश की नेश्राय मे की। करीब ८४ वर्ष की उम्र मे बिना किसी ऑपरेशन व बिना अस्पताल मे भर्ती हुये आप सथारे सहित दि १४-९-१९९५ को स्वर्ग सिधारे। मृत्युपरात दोनो आँखो का दान कर दो अधे व्यक्तियो को नेत्र ज्योति प्रदान की। इसी तरह श्रीमती झमकूदेवी जी सेठिया वात्सल्य मूर्ति पढी लिखी नही होने पर भी हिसाब किताब मे अत्यन्त कुशल, प्रतिदिन सामायिक साधनारत, वास्तुशास्त्र एव ग्रहतारो का अच्छा ज्ञान रखनेवाली, वच्चो को सुसस्कार देकर पालन करने वाली माता थी। ८० वर्ष के उपर की अवस्था मे दि ६-९-२००१ को स्वय बैठकर दिन मे ३ ३० स ४ ०० बजे तक २० लोगस्स का ध्यान किया और ४ ४५ बजे स्वर्ग सिधारी। आपके तीन पुत्र एव पुत्रवधुएँ श्री भगवतीलालजी श्रीमती चन्द्रकान्ताजी सेठिया (भीलवाडा मे उद्योगरत एव अ भा साधुमार्गी जैन सघ के मत्री) श्री प्रेमसिहजी श्रीमती सुशीला जी सेठिया (सेट्रल बैक की उच्चपद पर नौकरी से सेवानिवृत्त भीलवाडा मे व्यवसायरत) एव श्री लक्ष्मीलालजी श्रीमती आशाजी सेठिया (मुम्बई मे सी ए का व्यवसायरत) है और ४ पुत्रीयॉ श्रीमती सोहनदेवी कोठारी भीलवाडा, श्रीमती पारसदेवी सचेती भीलवाडा, श्रीमती कमलादेवी बाघमार भीलवाडा, एव श्रीमती जतनदेवी पटवारी चित्तौडगढहै/आपके ६ पौत्र किरण सिह-किरण बाला, मनीष-अन्जू, बसन्त-मोनिका, विनोद-सुनिता, विकास-रितिका, एव वैभव सेठिया, २ पौत्रीयॉ श्रीमती लतादेवी पोखरणा उदयपुर व श्रीमती मीनाक्षी भण्डारी सुरत है तथा प्रपोत्र पुलकित, मोहित, सिद्धार्थ व विनय तथा प्रपौत्रियॉ पलक, दीक्षा व देशना से भरापुरा परम गुरु भक्त, धर्मनिष्ठ परिवार है।